बी0टी0सी0 (द्विवर्षीय) पाठ्यक्रम
(सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए) **सेमेस्टर – प्रथम**
हिन्दी
कक्षा शिक्षण

पाठ–1

हिन्दी भाषा की ध्वनियों को सुनकर समझना एवं शुद्ध उच्चारण

ध्वनि भाषा की सबसे छोटी और सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाई है। ध्वनि चिह्नों के समष्टि को भाषा कहते हैं। भाषा निर्माण का सम्पूर्ण ढाँचा ध्वनि संकेतों पर निर्भर रहता है। प्रश्न है कि 'भाषा' क्या है? भाषा में ध्वनि की भूमिका क्या और किस रूप में है? ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण किस प्रकार किया जा सकता है? इन सभी का समाधान इस इकाई के अध्ययन एवे विश्लेषण का मूल बिन्दु है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

बच्चों को 'भाषा क्या है? यह समझा सकेगें।
भाषा में ध्वनि को स्पष्ट कर सकेगें।
भाषा की ध्वनियों को सुनकर समझने में समर्थ बना सकेगें।
बच्चों को दो ध्वनियों में बीच अन्तर को पहचानने में समर्थ बना सकेगें।
बच्चों को अपने भावों को बेझिझक कहने में समर्थ बना सकेंगे।

सहायक सामग्री– आडियो/वीडियो सामग्री, चित्रकार्ड, चार्टपेपर, मार्कर श्यामपट्ट।

विषय विस्तार–

विद्यालय में प्रवेश लेने के पहले बच्चे भाषायी कौशल की प्राथमिक दक्षता को बहुत हद तक हासिल कर चुके होते हैं। वे माता–पिता, परिवार के दूसरे सदस्यों की बातों को सुनकर समझने लगते हैं। अपनी अभिप्राय भी बताने में समर्थ रहते हैं। इतना ही नहीं वे पक्षियों का कलरव, पायलों की रून–झुन, बादलों की गर्जना, फोन की घण्टी, मोटर गाड़ियों के हार्न आदि को भी पूरी तरह जानते समझते हैं। बस, उन्हें जिसकी पहचान अब तक नहीं हुई, वह है–भाषिक ध्वनियाँ।

प्रशिक्षु के लिए– प्रशिक्षु, बच्चों को इन भाषिक ध्वनियों के बारे में सरल और स्पष्ट ढंग से समझा सके इसके लिए आवष्यक है कि वे स्वयं इस विषय में पूरी जानकारी रखते हो। यह तभी सम्भव है जब उन्हें वाग्यन्त्र/ध्वनियन्त्र की समझ हो।

प्रशिक्षक प्रतिभागियों से वाग्यन्त्र/ध्वनि–यन्त्र पर विस्तार से चर्चा करेगें, साथ प्रशिक्षु को ध्वनियों के उच्चारण स्थल से परिचित करायेगें।

उच्चारण स्थल के आधार पर ध्वनियों को इस प्रकार देखा जा सकता है–

क्र.सं.	नाम	स्थान	स्वर	व्यंजन
1	कण्ठ्य	कण्ठ	अ, अः	क, ख, ग, घ
2	तालव्य	तालु	ई, ई	च, छ, ज, झ, य, श
3	मूर्धन्य	मूर्धा	ऋ	ट, ठ, ड, ढ, र, ष
4	दन्त्य	दाँत	–	त, थ, द, ध, ल, स
5	ओष्ठ्य	ओष्ठ	उ, ऊ	प, फ, ब, भ, म
6	अनुनासिक	नासिका	अं	ङ., ञ, ण, न, म
7	कण्ठ्य तालव्य	कण्ठ और तालु	ए, ऐ	–
8	कण्ठ्योष्ठ्य	कण्ठ और ओष्ठ	ओ, औ	–

बच्चों के लिए–

बच्चों को भाषा और उसकी ध्वनियों से परिचित कराने के लिए निम्नलिखित तरीके/गतिविधियाँ अपनाए जा सकते हैं–

तरीका –01– आडियो/वीडियो सामग्री का प्रयोग करते हुए प्रशिक्षक उन्हें–

- घण्टी का बजना।
- समुद्र की गर्जना
- घोड़े की टप–टप।
- चिड़ियों का चहकना।
- सब्जी की छौंकन।
- यातायात संकेत।
- मौन भाव से हाथ जोड़ना।
- क्रोध से भरे लाल नेत्र।

आदि कुछ ऐसे दृश्यों और ध्वनियों को दिखाते और सुनाते हुए यह स्पष्ट करे कि इन दृश्यों और चित्रों में यद्यपि कुछ न कुछ सुनायी दे रहा और अपनी बात को दूसरों के सामने रखने का प्रयास भी किया जा रहा है, परन्तु इसे 'भाषा' नहीं कहा जा सकता। एक दूसरे आडियो/वीडियों सामग्री का प्रयोग कर उन्हें

- दो व्यक्तियों को परस्पर बात करते हुए,
- कोई समाचार सुनाते हुए/सुनते हुए
- किसी व्यक्ति को लिखते हुए
- किसी व्यक्ति द्वारा पढ़ते हुए, चित्र को/दृश्य को दिखाकर यह स्पष्ट किया जायेगा कि अब हमने देखा दो व्यक्ति परस्पर बोलकर बातें कर रहे हैं, कुछ लोग सुनकर अभिप्राय ग्रहण कर रहे हैं, कोई लिखकर अपनी बात कह रहा है तो कोई पढ़कर बातों को समझ रहा है– इन दृश्यों में अपने भावों को दो प्रकार से व्यक्त किया जा रहा है।

1. बोलकर और सुनकर,
2. लिखकर और पढ़कर। अभिव्यक्ति के इन्हीं दोनों रूपों के हम हिन्दी में 'भाषा' कहेंगे।

तरीका–02– प्रशिक्षक एक वर्ण से बने चार–पाँच चित्रों को दिखाते हुए उन्हें पहचानने को कहेंगे। पहचाने हुए चित्रों के सामने उनके नाम श्यामपट्ट पर अंकित करते चलेय जैसे–

	– कलछी
	– कबूतर
	– कलम
	– कढ़ाही
	– कटहल

अब इन शब्द की प्रथम ध्वनि की एकरूपता की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए उसका उच्चारण कराएं।
अगले चरण में शब्दों को तोड़े और जोड़े जैसे–

कटहल – क ट ह ल

तरीका – 03– प्रशिक्षक प्रतिभागियों/छात्रों से ध्वनि सम्बन्धी कुछ बातें करें। हो सकता है कुछ प्रतिभागी/छात्र ध्वनि के विषय में समझ रखते हो और कुछ नहीं भी रखते हो। एक सामान्य चर्चा के बाद उन्हें दो समूहों में बाँट दें।

- प्रथम समूह से भाषा की ध्वनियों का उच्चारण करने को कहें। बोले गए ध्वनियों को प्रशिक्षक श्यामपट्ट पर लिखता चले।
- समूह एक से छूटी हुई ध्वनियों का समूह दो से उच्चारण करने को कहे।

बाद में स्वयं यदि दोनों समूहों से कोई ध्वनि छूट गई है तो उसे बताते हुए उनका उच्चारण कराए।
अगले चरण में प्रथम समूह से 'म' (कोई और ध्वनि का प्रयोग भी प्रशिक्षक अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।) से शुरू होने वाले शब्द बोलने को कहें। प्रतिभागियों द्वारा बोले गए शब्दों को प्रशिक्षक श्यामपट्ट पर लिखता चले। जैसे– मामा, मछली, मन्दिर, माली।
दूसरे समूह से उन शब्दों से वाक्य बनाने को कहें। वाक्यों को भी श्यामपट्ट पर लिखता चले।
प्रशिक्षक वाक्यों को तोड़कर मूल ध्वनि/वर्ण तक पहुँचे, फिर उन्हें जोड़ दें।
यही प्रयास प्रतिभागियों/छात्रों से अन्य शब्दों और वाक्यों द्वारा करने को प्रेरित करें।
तरीका–04– प्रशिक्षक चार्ट पेपर पर लिखकर कोई कविता, कहानी या गीत हाव–भाव के साथ स्पष्ट उच्चारण में कहें, जैसे–

''नानी का संदूक निराला
हुआ धुएँ से बेहद काला।
पीछे से वह खुल जाता है
आगे लटका रहता ताला।
चन्दन, चौकी देखी उसमें
बाली जौ की देखी उसमें
खाली जगहों में है ताला।''

- प्रतिभागियों/छात्रों से अनुकरण कराएं।

मूल्यांकनः–

- कविता में एक वर्ण से बने एक से अधिक शब्दों को छाँटने को कहे–
  जैसे **1 नानी, निराला 2, चन्दन चौकी।**
- कविता में आए प्रत्येक शब्द की प्रथम ध्वनि की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए उन ध्वनियों से नए शब्द बनाने को प्रेरित करें तथा उनका उच्चारण करने को प्रोत्साहित करें।

बच्चों के लिएः– प्रशिक्षक बच्चों से कुछ प्रश्न पूछे, जैसे–

- तुम्हारा नाम क्या है?
- तुम्हारा घर कहाँ है?
- घर पर कौन–कौन रहता है?
- क्या तुम्हारे घर पर कोई पालतू जानवर है?
- तुम्हें क्या अच्छा लगता है? आदि। उत्तर में प्राप्त शब्दों और वाक्यों को प्रशिक्षक श्यामपट्ट पर लिखता चले। जब प्रशिक्षक भाषिक ध्वनियों की मौलिक समझ के प्रति आश्वस्त हो जाए

तब वह ध्वनियों के व्याकरणिक पक्ष पर विस्तार से चर्चा करें, जैसे–स्वर, व्यंजन, व्यंजन वर्ग, संयुक्त व्यंजन आदि।

मूल्यांकन:–

- निम्नलिखित में कौन सा स्वर से बना शब्द है और कौन सा व्यंजन से बना शब्द है– इमली, खाना, औरत, पानी, राखी, अण्डा, गाँव, ढोलक।
- जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है उन्हें .....कहते है।
  क– व्यंजन **ख**– स्वर **ग**– अनुस्वार **घ**– विसर्ग
- जिन स्वरों को बोलने में कम समय लगता है उन्हें ..... तथा जिन स्वरों को बोलने में अधिक समय लगता है उन्हें.....कहते हैं।
- क्ष, त्र, ज्ञ हिन्दी भाषा की कौन सी ध्वनियां हैं।
  क– स्वर **ख**– व्यंजन **ग**– संयुक्त व्यंजन **घ**– आगत

ध्वनि सम्बन्धी सभी बातों को साझा करने के बाद प्रशिक्षक उच्चारण शुद्धता पर काम करें।

उच्चारण शुद्धता– किसी भी भाषा में उच्चारण का विशेष महत्व होता है। भाषा के शब्दों का सही उच्चारण उस भाषा के परिनिष्ठित रूप को व्यक्त करता है जहाँ तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है तो इस सम्बन्ध में ध्यातव्य बात यह हैं कि हिन्दी एक ध्वन्यात्मक भाषा है। इसमें जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। अर्थात् अशुद्ध उच्चारण का प्रभाव सीधे वर्तनी पर पड़ता है। दूसरे, उच्चारण में अन्तर आने पर शब्द का अर्थ भी बदल सकता है। जैसे– और–ओर, पक्का–पका, बही–वही, कुल–कूल, शर–सर, बाद–वाद। इसके साथ ही उच्चारण में अभिव्यक्ति की सशक्त क्षमता होती है। किसी भी बात के कहने के तरीके मात्र से उसमें निहित भाव बहुत हद तक व्यक्त हो जाता हैं जैसे– 1. ''कल तुम्हें परीक्षा देनी है।'' 2. ''कल तुम्हें परीक्षा देनी है? यहाँ पहला वाक्य आदेशात्मक है तथा दूसरा प्रश्नसूचक। सम्भवतः इसीलिए भारतीय मनीषियों ने भाषा में उच्चारण शुद्धता पर गहरा विचार किया है। उनके अनुसार 1. शंकित होकर 2. डरकर 3. जोर से चिल्लाकर 4. अस्पष्टतापूर्वक 5. नाक से नकिया कर, 6. मुँह में ध्वनि या शब्द को काटते हुए, 7. गाते हुए स्वर से, 8. दीनता के साथ 9. अधिक रूक–रूककर – उच्चारण नहीं करना चाहिए।

उच्चारण शिक्षण के सुझाव :– प्रशिक्षक उच्चारण को शुद्ध करने हेतु निम्नलिखित उपाय अपनायें–

1. प्रतिभागियों के समक्ष शुद्ध भाषा का प्रयोग किया जाय। उन्हें शुद्ध उच्चारित भाषा सुनने का अधिक से अधिक अवसर प्रदान किया जाय।
2. प्रतिभागी यदि किसी शब्द का शुद्ध उच्चारण करने में असमर्थ हो तो उस शब्द का खण्ड–खण्ड उच्चारण अभ्यास कराया जाय।
3. ऋ, श, ष, ज्ञ वर्णो से बने शब्दों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाय।
4. ध्वनियों के उच्चारण स्थान से परिचित कराकर उसी के अनुसार उच्चारण अभ्यास कराया जाय।
5. ध्यान रखना चाहिए कि पढ़ते या बोलते समय बीच में टोकने की बजाय बोलना/पढ़ना समाप्त होने के बाद अशुद्ध शब्द के उच्चारण का संशोधन करना चाहिए।
6. आदर्श उच्चारण के उदाहरण टेप रिकार्डर की सहायता से भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं। ऐसे टेप पहले से तैयार रहने चाहिए। उन्हें सुनाकर फिर प्रतिभागियों से उसी प्रकार उच्चारण करने के लिए कहा जाय।
7. ड़, ढ़ के उच्चारण का अभ्यास कराया जाय।
8. संयुक्ताक्षरों के उच्चारण पर ध्यान दिया जाय। जैसे–

क्षमा – क् + ष = क्ष

ज्ञान – ज् + ञ = ज्ञ

9. 'ऐ' का उच्चारण स्थानीय बोलियों से प्रभावित होने के कारण अ, इ जैसे उच्चारण होता है जो गलत है। इसके उच्चारण पर ध्यान दें –

पैसा – पइसा

कौआ – कउआ

10. नासिक व्यंजन ङ, ञ, ण, म, न का उच्चारण अलग–अलग है, लेकिन सबका उच्चारण नाक के सहारे होता है। इसका अभ्यास कराएँ।

इस प्रकार बच्चे सरल और रोचक ढंग से न केवल भाषिक ध्वनियों को समझते हुए सुनने और बोलने में समर्थ होंगे वल्कि संकोची बच्चों का भय भी दूर हो सकता है और वे मुक्त कंठ से कक्षा में सहभागिता निभायेंगे। वल्कि अध्यापक की बातों को सुनने और समझने में भी उत्साह दिखायेंगे।

मूल्यांकन –

- सुनी–सुनाई गई कविता, कहानी, वर्णन पर बातचीत कर उनकी समझ का आकलन करना।
- विभिन्न निर्देश देकर उनके अनुपालन के आधार पर सुनकर समझने की दक्षता का आकलन करना।
- हिन्दी वर्णमाला की समस्त ध्वनियों का उच्चारण कराकर उनके उच्चारण की दक्षता का आकलन करना।

पाठ–2

देवनागरी लिपि के समस्त लिपि संकेतों–स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण, संयुक्ताक्षर, मात्राओं का ज्ञान

शिक्षण बिन्दु –

1. रोचक विधियों से वर्णमाला (स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर) एवं मात्राओं की पहचान कराना।
2. वर्णों का शुद्ध उच्चारण कर लिखवाना।
3. इन वर्णों का सार्थक शब्दों में प्रयोग करना।
4. वर्णों के संयुक्त करने के नियम एवं प्रयोग बताना।

चर्चा बिन्दु– देवनागरी लिपि से आप क्या समझते हैं?

देवनागरी लिपि :–

हिन्दी की लिपि 'देवनागरी' कहलाती है। इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है वर्तमान रूप ब्राह्मी का विकसित रूप है। समय–समय पर देवनागरी लिपि में नयी–नयी ध्वनियाँऔर उनके लिए नये–नये चिह्न बना लिये गये। यही कारण है कि आज हमारी वर्णमाला एवं लिपि संसार की सबसे विकसित वर्णमाला और लिपि मानी जाती है। स्पष्टता और व्यंजकता में अन्य दूसरी कोई लिपि इसकी तुलना नहीं कर सकती। संस्कृत, हिन्दी, मराठी और नेपाली भाषाएँ इसी लिपि में लिखी जाती हैं। बंगला और गुजराती लिपियाँ इससे काफी मिलती जुलती हैं। गुरुमुखी, मुंडा, कैथी आदि लिपियाँ भी देवनागरी से ही विकसित हुई हैं।

देवनागरी लिपि की वर्णमाला प्रायः संस्कृत के आधार पर विकसित हुई है। वर्णमाला के दो भेद किये गये हैं–

1. स्वर **2**. व्यंजन

स्वर– जिन ध्वनियों के उच्चारण श्वांस वायु अबाध गति से आती–जाती है उन्हें स्वर कहते हैं इसके उच्चारण में विषेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता है।

व्यंजन– जिन ध्वनियों के उच्चारण श्वांस गति में कहीं न कहीं बाधा अवष्य पहुंचती है उसे व्यंजन ध्वनि कहते हैं। व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है।

उत्तर प्रदेश के पाठ्यक्रम में वर्णमाला निम्नलिखित है –

स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः।

व्यंजन – क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व श
ष स ह क्ष त्र ज्ञ

- ट वर्ग में ड़ और ढ़ दो वर्ण भी प्रयुक्त किये जाते हैं, जिन्हें उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।
- 'श्र' को भी संयुक्ताक्षर माना जाता है।
- अं और अः अयोगवाह कहे जाते है। इनका प्रयोग स्वर और व्यंजन दोनो में होता है

मूल्यांकन–

- देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ?
- इस लिपि में लिखी जाने वाली भाषाएं कौन–कौन सी हैं?
- अयोगवाह से आप क्या समझते हैं?

तरीका / विधा :–

हिन्दी की प्रारम्भिक कक्षाओं मे शिक्षक को बच्चों के साथ अधिक से अधिक सुनने बोलने एवं समझने के काम करने होते हैं, उन्हें अधिक से अधिक अवसर देने होते हैं, क्योंकि उस समय बच्चों की भाषा का पर्याप्त विकास नहीं हुआ रहता है। हालांकि विद्यालय आने से पहले बच्चों के पास लगभग 1000–1500 शब्दों का भण्डार होता है। यदि इन शब्दों के साथ ही पढ़ने की शुरूआत होती है तो वे जल्दी सीखते हैं।

वर्णों को सिखाने हेतु वर्णमाला याद कराने का तरीका ठीक नहीं है। क्योंकि बच्चे वर्णों की आकृति से परिचित नहीं होते। अतः बच्चों द्वारा बोले गये शब्दों से वर्ण की ध्वनि पकड़वाया जाय तो वे वर्ण की बनावट और ध्वनि में सामंजस्य आसानी से बैठा लेते हैं। अतः कविता / कहानी द्वारा शब्दों पर, तत्पश्चात् वर्णो पर आना वर्णमाला सिखाने का सही तरीका है।

वर्णों को सिखाने का कोई निश्चित क्रम नहीं होता। बच्चा बोलने की शुरूआत न तो 'अ' से करता है और न ही 'क' से। अतः वर्णमाला सिखाते समय भी जरूरी नहीं कि 'अ' या 'क' से ही शुरूआत की जाय।

बच्चों के लिए–

विषयवस्तु की शुरूआत झिझक दूर करने हेतु बातचीत से ही की जाय। कुछ सरल कविताएं सुनाई तथा सुनी जाय। उदाहरणार्थ–

सर–सर सर–सर उड़ी पतंग
फर–फर फर–फर उड़ी पतंग

–कविता का वाचन अच्छी तरह से किया–कराया जाय।
–पतंग पर खूब बातचीत की जाय।
–कविता को पुनः गाते समय शब्दों पर अँगुली / प्वाइंटर रखते हुए आगे बढ़ा जाय। इससे बच्चे उन शब्दों के साथ तालमेल बैठाते चलते हैं।
–दूसरे चार्ट पर भी यही कविता लिखी हुई होगी लेकिन जिन वर्णों को सिखाना उद्देश्य हो उनसे संबंधित शब्द जैसे सर, फर और पतंग शब्द थोड़े बड़े एवं अन्य रंग वाले होंगे, ताकि कविता पढ़ते समय ध्यान उस विशेष शब्द पर चला जाय।
–कई बार अभ्यास कराने से शब्द की पहचान हो जाने पर तीसरे चार्ट पर यही पंक्तियाँ लिखी होंगी किन्तु अब उन शब्दों के पहले वर्ण, जैसे– स फ र प – वर्णों पर फोकस होगा। ये वर्ण बड़े एवं भिन्न रंग वाले होंगे जिससे ये अलग से नजर आयें।

मूल्यांकन–

–स, र, प, फ वर्णों की पहचान जांचने के लिए इन वर्णों से युक्त अन्य शब्दों को देकर पढ़ने का अभ्यास कराया जाय, जैसे– सड़क, सरसों, रात, रहीम, पवन, परदा, फल, फंदा आदि। इसी प्रकार अन्य वर्णो की भी पहचान करानी चाहिए।

लिखने का अभ्यास :– उपर्युक्त वर्णों की पहचान हो जाने पर उनका लेखन सिखाने हेतु कुछ आकृतियाँ बनवाने का अभ्यास जरूरी है। ये आकृतियाँ हो सकती हैं–

रेखाएं– | \ /

गोला और अर्द्ध गोला – 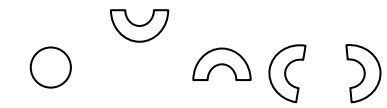

समान आकृति वाले वर्णों का लेखन एक साथ कराने से सीखने में आसानी होती है, जैसे– ग भ म झ, न त ल, र स ए ऐ आदि

वर्णों को लिखवाने की गतिविधियाँ :–

- ➢ प्लास्टिक या खुरदुरे तल पर लिखे वर्ण पर अँगुली फिराना।
- ➢ लिखे गये वर्ण में रंग भरना।
- ➢ बिन्दुओं पर पेंसिल/कलम चलाना।
- ➢ गत्ते या लकड़ी का बना खाली वर्ण रखकर उसमें बालू भरना।
- ➢ वर्णों को कार्बन पेपर की सहायता से सादे पेपर पर छपवाना।
- ➢ छिद्रयुक्त कार्ड (वर्ण लिखे) पर रूई की सहायता से रंग भरना।
- ➢ कार्ड पर लिखे वर्ण पर रस्सी, ऊन, बीज, तीली चिपकाना।
- ➢ वर्ण को देखकर लिखना।
- ➢ वर्ण के कटे हुए भाग को जोड़ना।
- ➢ एक वर्ण को लिखने/बनाने का अभ्यास हो जाने पर अगले वर्ण का अभ्यास करायें।
- ➢ पूर्व में सिखाये गये वर्णों की पुनरावृत्ति होती रहनी चाहिए।

मात्राओं का ज्ञान :–

तरीका –

- बातचीत
- छोटे समूह में कार्य
- गतिविधियाँ

–बच्चों के बीच सामान्य परिवेशीय चर्चा करने के पश्चात् मात्रिक और अमात्रिक शब्दों के बीच अन्तर पर लाया जाये। इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ करायी जाये।

–एक बड़े फ्लैश कार्ड पर कोई मात्रा जैसे – ा या 'ी' बनाकर बच्चों को कई समूहों में बाँट दिया जाय। हर समूह को एक शब्द कार्ड सेट दे दिया जाय। बच्चों को – ा या 'ी' मात्रा वाला कार्ड दिखाकर प्रत्येक समूह से उस मात्रा के अक्षर कार्ड चुनकर लाने को कहा जाय।

–अमात्रिक शब्दों के पहले अक्षर पर मात्रा लगवाकर/ शब्दों के दूसरे अक्षर पर मात्रा लगवाकर एवं तीसरे अक्षर पर मात्रा लगवाकर शब्द बनाने की चुनौती दी जाय।

–कुछ शब्दों से मात्रा हटाकर दूसरी मात्रा लगवाकर पढ़वाया जाय तथा ध्वनि अंतर पर ध्यान आकृष्ट किया जाय, जैसे–

लड़की–लड़क– लड़का

तितली–ततली–तीतल

–मात्रा खोजो और मिलाओ जैसी गतिविधियाँ देकर पुनरावृत्ति करायी जाय–

लकड़ी	ी	धनिया
कमीज		आलमारी
गिलास	ि	बटुआ
रसोई		तरबूज
खिड़की		किताब

– स्वर और उनकी मात्राओं से सम्बन्धित चार्ट प्रस्तुत कर सभी मात्राओं की पहचान करायी जाय।

मूल्यांकन :– निम्नलिखित तरीके हैं, जिनसे वर्ण पहचान का मूल्यांकन किया जा सकता है–

1. कविता देकर उसमें किसी विशेष वर्ण को ढूँढने के लिए देना।
2. वर्णों के कई टुकड़े दे करके उनको जोड़कर वर्ण बनवाना।

3. वर्ण से संबंधित वस्तुओं के नाम पूछना, जैसे– 'प' से कौन–कौन सी वस्तुएँ हो सकती है?
4. वस्तुओं/व्यक्तियों के नाम बताकर उनमें निहित वर्णों की पहचान करना।
5. चित्र से संबंधित वर्ण का मिलान करना।

अनार का चित्र	आ
सड़क का चित्र	फ
आम का चित्र	स
फल का चित्र	अ

लिखने का मूल्यांकन :–

1– चित्र से संबंधित प्रथम वर्ण को लिखवाना–
अमरूद का चित्र .....
आदमी का चित्र .....
सड़क का चित्र .....
सरौते का चित्र .....
फूल का चित्र .....

2– अधूरे वर्ण लिखकर उन्हें पूरा करवाना।
3– सिखाये गये वर्णों को छोटे समूह में लिखवाना।
4– कसक, फसल, अपार, पपीता आदि शब्दों को देकर 'क', 'फ', 'र', 'प' पर बोलकर गोला लगवाना।
5– दो या तीन वर्णों को मिलाकर तथा सही क्रम में करके शब्द बनाना जैसे–

फ + ल = फल
स ड़ क = सड़क
ल क म = कमल
अ र म = अमर

सम्पूर्ण वर्णमाला को सिखाने में अनुमानतः बीस दिन लग सकते हैं।

6– एक वर्ण के आगे या पीछे अन्य वर्ण को जोड़कर शब्द बनाना–
ट का कार्ड देकर उससे पूर्व घ, न, प, च के कार्ड को रखकर शब्द बनवाना और लिखवाना।
7– वर्णों में मात्रा जोड़कर शब्द बनवाना।

समग्री निर्माण/कुछ करने को :–

–अक्षर सिखाने हेतु सभी अक्षरों के विभिन्न आकृतियों में कटे हुए कार्ड बनवाना।
–मानक तरीके से लिखी वर्णमाला का चार्ट बनवाना।
–वर्णों को बनाने का सही तरीका दर्शाता हुआ चार्ट/वीडियो क्लिप/सामग्री तैयार करना।
–संयुक्ताक्षर सिखाने हेतु चार्ट पर क्ष त्र ज्ञ श्र में दोनों संयुक्त अक्षरों को अलग–अलग प्रदर्शित करना, जैसे –क् + ष, त् + र, ज् + ञ, श् + र।
–मात्राओं के कार्ड – । ि ी ..... विभिन्न रंगों में बनवाना, जिससे उन्हें व्यंजन के बाद रखकर प्रयोग कराया जा सके।
– स्वर और उनकी मात्राओं का दर्शाता चार्ट बनाना।
प्रोजेक्ट – घरेलू बातचीत में सबसे ज्यादा बोले जाने वाले शब्दों/वर्णों की सूची बनवाना।

संयुक्त वर्ण –

जब दो वर्ण मिलकर किसी शब्द में प्रयुक्त होते हैं तो उन्हें संयुक्त वर्ण कहा जाता है। इनमें कम से कम एक वर्ण स्वर रहित होता है, जैसे– ग्वाला, रम्या, क्यारी, अन्त आदि।

वर्णों को उनकी आकृति के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है –

1. खड़ी पाई या अन्तपाई वाले वर्ण।

2. मध्य पाई वाले वर्ण
3. बिना पाई वाले वर्ण
4. विशिष्ट वर्ण

प्रथम वर्ण में आने वाले वर्ण हैं – ख, ग, घ, च, ज, झ, ञ, ण, त, थ, ध, न, प, ब, भ, म, य, ल, व, श, स, क्ष, त्र, ज्ञ

द्वितीय वर्ण के वर्ण– क, फ, (ह)

बिना पाई वाले वर्ण– छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह

विशिष्ट वर्ण– र

संयुक्त करने का नियम–

1. प्रथम वर्ग वाले वर्णों को अन्त्य पाई हटा दी जाती है, जैसे– ख्याति, ग्वाला, च्यवन आदि।
2. द्वितीय वर्ग में लटकी हुई सूँड हटा दी जाती है, जैसे– क्यारी, फ्यूज, ब्राह्मण।
3. तृतीय वर्ग वाले वर्णों के नीचे हलन्त (्) लग जाता है, जैसे– उच्छ्वास, ट्यूब आदि।
4. ' र ' विशिष्ट वर्ण माना जाता है। जब यह अन्य वर्णों के साथ संयुक्त होता है अर्थात स्वर रहित होता है तो इसका स्वरूप रेफ (र्) के रूप में होता है। उस समय इसका प्रयोग अगले वर्ण के ऊपर होता है, जैसे–कर्म = कर्म।

- 'र' के साथ जब अन्य कोई स्वर रहित वर्ण जुड़ता है तो 'र' अपना स्वरूप बदल लेता है– (्) और (्र) के रूप में।
- 'र' के वक्र रेखा (्) वाला स्वरूप तब होता है जब जुड़ने वाले वर्ण अन्त्य पाई और मध्य पाई वाले वर्ग के हों, जैसे–क् + र = क्र, ख् + र = ख्र।
- र के ' ्र' के रूप का प्रयोग तब होता है जब संयुक्त होने वाला वर्ण बिना पाई वाले वर्ग का हो, जैसे– ट् + र = ट्र, ड् + र = ड्र आदि
- 'र' के प्रयोग में प्रायः लोग गलतियाँ करते हैं, अतः इसके मूल्यांकन में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। पढ़े लिखे लोग भी 'आर्शीवाद' जैसे अशुद्ध प्रयोग करते हैं, जबकि सही प्रयोग है–आशीर्वाद = आशीर्वाद।

<u>मूल्यांकन</u>–

1– निम्नलिखित में कौन सा प्रयोग सही है–
क. आर्षीवाद ख. आषीर्वाद ग. आर्षिवाद घ. आषिर्वाद।

2– ड़ और ढ़ वर्णों को वर्णमाला में किस वर्ग में रखा गया है?

3– निम्नलिखित वर्णों को संयुक्त करके लिखिए–
क् + र = ३३३३३३ण
ह् + र = ३३३३३३ण
ड् + र = ३३३३३ण
श् + र = ३३३३३३ण

4– निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को अलग–अलग करके लिखिए–
श्रम .....
प्रण.....
ट्रक.....
क्षत्र.....
ज्ञान.....

पाठ–3

विलोम, समानार्थी शब्द समानध्वनि वाले शब्द और तुकान्त की पहचान एवं प्रयोग

शिक्षण बिन्दु–

- विलोम, समानार्थी, समान ध्वनि वाले शब्दों की समझ विकसित करना।
- भाषा प्रयोग सम्बन्धी कुशलता विकसित करना।
- शब्द–भण्डार में वृद्धि करना।
- तुकान्त शब्दों की पहचान एवं प्रयोग में समर्थ करना।

सहायक सामग्री–शब्द कार्ड, चार्ट पेपर, वाक्य पट्टियाँ, मार्कर।

विषय विस्तार– भाषा–सामर्थ्य का प्रमुख आधार होता है– उसकी शब्दावली और शब्द–भण्डार। इसमें वृद्धि तथा अधिकार के लिए पर्याप्त अभ्यास की आवश्कता होती है। इससे ही भाषायी कौशलों को प्राप्त करने में सफलता मिलती है। वैसे तो सहज तरीके से प्राप्त मातृभाषा को भी सीखता पड़ता है, तब जाकर वाणी या लेखन में प्रवाह आता है।

छात्र/प्रतिभागी का हिन्दी भाषा पर अधिकार हो सके, वे भाषायी प्रयोग में निपुणता प्राप्त कर सके, इसके लिए उनके शब्द–भण्डार में वृद्धि आवश्यक है। इस दिषा में विलोम शब्द, समानार्थी शब्द, समानध्वनि वाले शब्द और तुकान्त शब्दों का ज्ञान सहायक होगा। इनकी जानकारी से न केवल शब्द प्रयोग सम्बन्धी ज्ञान, कौशल और क्षमता में वृद्धि होगी बल्कि उनका वक्तृत्व, लेखन और अभिव्यक्ति भी प्रभावी और रोचक हो जाएगें। इनके ज्ञान तथा अभ्यास के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाये जा सकते हैं:–

गतिविधि–1– प्रशिक्षक भिन्न प्रकृति वाले कुछ वस्तुओं/पदार्थों को प्रस्तुत कर प्रतिभागियों/छात्रों से (जैसे फूल–काँटा, ठण्डा–गर्म, मोटा–पतला, छोटा–बड़ा।) उनके स्वभाव, आकार आदि के बारे में अनुभव एवं प्रयोग के आधार पर चर्चा करें।

गतिविधि–2– प्रशिक्षक प्रतिभागियों को दो समूह में बांटकर एक समूह के सदस्यों को शब्द कार्ड बाँटे। दूसरे समूह के सदस्यों को विपरीत अर्थ वाले शब्द कार्ड बाँटें। अब जिस सदस्य के पास जो शब्द–कार्ड हो उसे अपने विपरीत अर्थ वाले शब्द–कार्ड प्राप्त सदस्य के साथ खड़ा करें। जैसे–

समूह–01	समूह–02
रात	दिन
ऊपर	नीचे
अच्छा	बुरा

- अब छात्रों को उन शब्दों के अर्थ के बारे में बताए।
- प्रशिक्षक स्वयं कुछ शब्दों को बोलते हुए प्रतिभागियों से उसके उल्टे अर्थ वाले शब्द बोलने को कहें।
- बाद में यह स्पष्ट करें कि– **किसी शब्द का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द 'विलोम शब्द' कहा जाता है।**
- जब आप आष्वस्त हो जाए कि 'विलोम शब्द' का अभिप्राय सभी को समझ में आ चुका है तब इससे सम्बन्धित सूक्ष्म बातों की चर्चा कर उसे समझाएं। जैसे– विलोम शब्द बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शब्द की प्रकृति और वर्ग क्या है? अर्थात शब्द यदि तद्भव है तो उसका विलोम भी तद्भव शब्द ही होगा शब्द यदि विषेषण है तो विलोम भी विषेषण शब्द होगा आदि।

नोटः– प्रशिक्षु आगे चलकर इसी प्रकार की गतिविधियां बच्चों के साथ भी करा सकते हैं।

मूल्यांकनः–

1– निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए–
गाय, लड़का, सुबह, रोगी, सरल, जय, राजा, देवता, अमीर, काला।

2– अ, अन्, स, नि– इन उपसर्गों का प्रयोग शब्दों के साथ करके दिखाइए।

गतिविधि–3–प्रशिक्षक चार्ट पेपर या वाक्य पट्टियों/श्यामपट्ट पर कुछ वाक्यों को उदाहरण स्वरूप लिखकर प्रस्तुत करें, जैसे–

1– आज लाल घाघरा पहनकर गीता पनघट पर गगरा में पानी भरने गई।
2– गुड़ में जो मिठास का गुण है वह शक्कर में नहीं।
3– पसीने से तर कपड़े को तरू–छाया में सुखाया।
4– राम और श्याम हमेषा एक समान सारा सामान लेते हैं।
5– चिड़ियों के नीड़ में रखे अण्डे वर्षा के नीर से भींग गए।
6– इस नदी के कूल पर खड़े होकर रमेष ने कुल 12 मछलियाँ पकड़ी।

प्रत्येक वाक्य के रेखाकिंत शब्दों के बीच मौजूद अन्तर की ओर ध्यान दिलाते हुए उनके अर्थ स्पष्ट करें। साथ ही ऐसे शब्दों के प्रयोग में सावधानी रखने की सलाह भी दें।

मूल्यांकन–

1– शब्द–युग्मों का अन्तर बताइए–
और–ओर, कूल–कुल, वहन–बहन, सर–शर।

2– 'सुत' शब्द का अर्थ क्या होगा–
क– पुत्र **ख**– सारथी **ग**– पुत्री **घ**– सुपारी

गतिविधि–04

- प्रशिक्षक चार्ट पेपर पर एक ऐसी कविता लिखकर प्रस्तुत करेगें जिनमें अन्तिम स्वर समान हो, जैसे–

''अम्मा जरा देख तो ऊपर, चले आ रहें बादल
गरज रहें हैं, बरस रहें हैं, दीख रहा है जल ही जल।
हवा चल रही क्या पुरवाई, झूम रही है डाली डाली,
ऊपर काली घटा घिरी है, नीचे फैली हरियाली।
भींग रहे हैं खेत, बाग, वन, भींग रहे हैं घर आँगन,
बाहर निकलूँ मैं भी भींगू, चाह रहा है मेरा मन।''

- कविता की प्रत्येक पंक्ति के अन्तिम स्वर दल–जल, डाली–डाली, गन–मन की ओर ध्यान आकर्षित कर स्पष्ट करें कि जिनके अन्त की ध्वनियां मिलती हैं उन्हें 'तुकान्त' शब्द कहते हैं। कविता में तुकान्त का बड़ा महत्व है।
- प्रशिक्षु आगे चलकर बच्चों के बीच दो वर्ण, तीन वर्ण वाले शब्दों को रखकर उसका तुक मिलाने का अभ्यास कराएं, जैसे–

शब्द	**तुक**
लाया	पाया, खाया, भाया, आया आदि
करेगा	भरेगा, जरेगा, रखेगा, जमेगा आदि

- प्रतिभागियों से ऐसे तुकान्त वाले कविता को सुने और सुनाएं तथा कोई कविता सुनाकर/लिखकर उसमें से तुकान्त शब्द छाँटने को बोले।

तरीका–05– प्रशिक्षक समान अर्थ वाले कुछ शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों/प्रतिभागियों से उन्हें मिलाने को कहें, जैसे–

पक्षी	–	वनराज
नौका	–	परमात्मा
ईश्वर	–	देह
बालक	–	खग
शरीर	–	नाव
सिंह	–	लड़का

मिलान कराते हुए इन शब्दों के अर्थ बताते हुए एक–एक पर्याय और बताना अधिक अच्छा होगा, जैसे– पक्षी को 'खग' और 'नभचर' भी कहा जाता है।

तरीका–06– प्रशिक्षक प्रतिभागियों/छात्रों से कुछ प्रश्न ऐसे कर सकता जैसे– जिस प्रकार 'सागर' और समुद्र एक है वैसे ही

प्रश्न		**उत्तर**
• 'आदमी' का पर्याय निम्नलिखित में दूसरा शब्द कौन सा होगा– मनुष्य,वस्त्र,पंखा	–	मनुष्य
• 'अतिथि' को और क्या कहते हैं?	–	मेहमान, पहुना
• 'सूरज' के लिए दूसरा शब्द और क्या हो सकता हैं?	–	रवि, सूर्य
• 'वृक्ष' को हम सभी सामान्य रूप से क्या कहते हैं?	–	पेड़, तरू

मूल्यांकन– सिखने/सिखाने के दौरान बच्चों/प्रतिभागियों की रूचि, लगाव और गतिविधियों का अवलोकन करते रहें।

- यह भी देखें कि आप बच्चों/प्रतिभागियों को प्रभावित कर पा रहें हैं या नहीं।
- बच्चे आपके सामने बोलने में भय और संकोच का अनुभव तो नहीं कर रहें?
- देखें कि कमजोर बच्चे चुपचाप तो नहीं बैठें है? उन्हें प्रोत्साहित करें।
- क्या आप बच्चों को सामूहिक रूप से सीखने/अभ्यास करने का मौका दे रहें हैं?

पाठ–4
विराम चिह्न

शिक्षण बिन्दु–

- विराम चिह्नों की समझ विकसित करना।
- विराम चिह्नों द्वारा भाषायी कौषल विकसित करना।
- शब्दों और वाक्यों के उच्चारण में उचित ठहराव स्थल व भाव को स्पष्ट करना।
- लेखन में विराम चिह्नों के महत्व को स्पष्ट करना।

शिक्षण सामग्री– चार्ट पेपर, मार्कर, वाक्य पट्टियाँ आदि।

विषय विस्तार–

हम अपने प्रतिदिन के बातचीत में सामान्य रूप से जहां जैसी जरूरत रहती है वहाँ वैसा विराम या ठहराव देते हैं और दूसरों के समक्ष अपनी बात, विचार या भावों
को रखते हैं, किन्तु इस विराम के भाषायी स्परूप से प्रायः बच्चे अपरिचित ही होते हैं। अतः प्रशिक्षक विराम चिह्नों की समझ विकसित करने के लिए निम्नलिखित तरीकों/ गतिविधियों को अपना सकते हैं–

(1) चर्चा द्वारा
(2) छोट–छोटे वाक्यों द्वारा
(3) प्रश्नोत्तर द्वारा

चर्चा द्वारा– प्रषिक्षक निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे– बड़े समूह में 'विराम चिह्न' से सम्बन्धित प्रमुख बातें साझा करेगे। यह जानने का भी प्रयत्न करेगें कि क्या उन्हें (समूह को) इसके बारे में कोई पूर्व जानकारी है या नहीं। है तो कितनी? वह सही है अथवा नहीं।

- चार्ट पेपर पर विराम चिह्न अंकित कोई अनुच्छेद, कविता या कहानी प्रस्तुत कर उचित हाव–भाव के साथ उच्चारण करें।
- विराम चिह्न लगे हुए स्थलों का किस प्रकार उच्चारण किया जा रहा है, इस ओर ध्यान आकर्षित कराएं। फिर उसी अनुच्छेद, कविता या कहानी का अनुकरण कराएं। (अनुकरण उच्चारण का सभी को समान अवसर देना चाहिए)।
- बिना विराम चिह्न लगे अनुच्छेद, कविता या कहानी को चार्ट पेपर पर अंकित कर उसका उच्चारण कराएं और उच्चारण एवं भाव ग्रहण में आने वाली परेषानियों पर चर्चा करें। यह परेषानी क्यों हो रही है, इसे स्पष्ट करें।
- विराम चिह्न के समुचित ज्ञान एवं प्रयोग विधि को स्पष्ट करने के लिए प्रषिक्षक चार्ट पेपर पर विराम चिह्नों के प्रकार को इस प्रकार समझाएं–

क्र.सं.	नाम	चिह्न	उदाहरण
1.	अल्पविराम	(,)	राम, श्याम, कृष्ण और मुरारी विद्यालय से घर चले गये।
2.	अर्धविराम	(;)	जो चाहो सो करोः अब मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।
3.	पूर्णविराम	(।)	राम पढ़ता है। आम पक गए हैं।
4.	प्रश्नवाचक	(?)	तुम्हारा नाम क्या है?
5.	विस्मयबोधक	(!)	हे भगवान! रक्षा करो।

6.	अवतरण चिह्न	(' ') (" ")	भारतीय धर्मग्रन्थों में 'रामायण' का विषेष महत्व है। बुद्ध ने कहा– "जीव हत्या पाप है।"

<u>छोटे–छोटे वाक्यों द्वारा</u>– प्रशिक्षक वाक्य पट्टियों पर छोट–छोटे वाक्य लिखकर ले जाये। इनमें निम्नलिखित प्रकार के वाक्य हो–

- बिना विराम चिह्न लगे वाक्य।
- अल्प विराम चिह्नों के प्रयोग वाले वाक्य।
- दो विराम चिह्नों के प्रयोग वाले वाक्य।
- तीन विराम चिह्नों के प्रयोग वाले वाक्य।
- लिखे गये प्रत्येक वाक्यों को 2 या 3 रूपों से परिवर्तित करके।

अब एक–एक वाक्य पट्टियाँ लेते हुए उसमें निहित भाव और लगे हुए विराम चिह्नों की सार्थकता तथा महत्व को समझाएं।

<u>प्रश्नोत्तर द्वारा</u>– इस गतिविधि के माध्यम से विराम चिह्न लगे वाक्य को उच्चरित करने का तरीका समझाया जा सकता है–

प्रश्न	उत्तर	स्पष्टीकरण
1. राम! तुम्हारे घर में कौन–कौन रहता है?	माँ, पिताजी और मैं।	एक वाक्य में दो या दो से अधिक समान पद होतो वहां अल्पविराम लगता है। इसके उच्चारण में उतना ही ठहराव उचित है जितना 'एक' के उच्चारण में।
2. रहीम! तुम विद्यालय कैसे आते हो?	मैं विद्यालय पैदल चल कर आता हूँ।	जहाँ वाक्य पूर्ण होता है, वहाँ पूर्ण विराम लगाया जाता है।
3. राम तुम क्या सोच रहे हो?	यह पंखा कैसे चलता है?	जिस वाक्य से प्रष्न का बोध हो वहां प्रष्नवाचक (?) चिह्न लगाते हैं।

<u>मूल्यांकन</u>–

- विराम चिह्न लगे 5–5 उदाहरण पुस्तक से ढूँढकर उनके नाम लिखने को कहें और देखें कि क्या वे ऐसा कर पा रहें हैं।
- दो–दो उदाहरण स्वयं बनाकर लिखने को कहें जिसमें अलग–अलग विराम चिह्न का प्रयोग हुआ हो।
- विराम चिह्न लगे संवादों का उच्चारण उचित ढंग से कर पा रहे है या नहीं इसका मूल्यांकन करें।

,,,,,

पाठ–5

लेखन शिक्षण की विधियाँ और लिखना सीखने में ध्यान रखने योग्य बातें– बैठने का ढंग, आँखों से कागज की दूरी, कलम पकड़ने की विधि, शिरोरखा, लिपि, अक्षर की सुडौलता और उपयुक्त नमूने, अभ्यास–सुलेख, अनुलेख, श्रुतलेख।

लिखना क्या?

अपने विचारों/भाषों की अभिव्यक्ति लिपि के माध्यम से करना ही लिखना है। प्रारंभिक स्तर पर भाषा की दक्षताओं में लेखन का स्थान सुनने, बोलने तथा पढ़ने के बाद आता है। आगे चलकर सुनना, बोलना और पढ़ना साथ–साथ चलता है। लिखने का काम करते समय भी हम किसी से बातचीत ही करते होते हैं। लिखने में अक्षर को अनुरूप बना लेना अनिवार्य है। हाथ की अँगुलियों की माँसपेशियों को यथोचित घुमाने में दक्ष होना जरूरी है। अक्षरों को पढ़ने में कुशल होने पर लिखना आसान होता है क्योंकि अक्षर की पहचान, ध्वनि और आकार मस्तिष्क में स्थायी रूप से बन जाते हैं। पढ़ना और लिखना, अलग नहीं हैं, बल्कि साथ–साथ चलने वाली क्रियाएं हैं।

लेखन दो तरह का होता है। पहला, जिसमें हम किसी निर्देष का पालन कर रहे होते हैं, जैसे–श्रुतलेख लिखना, सुलेख लिखना या कुछ और देखकर लिखना। दूसरा रूप वह है जो मनन, चिन्तन और सृजन के अधीन होता है, जिसमें अपने भावों, विचारों को वाक्यों/अनुच्छेदों में व्यक्त करते हैं। पहले रूप को यांत्रिक लेखन और दूसरे को रचनात्मक लेखन कहते हैं।

हमारी कक्षाओं में प्रायः यांत्रिक लेखन पर जोर होता है, जिसके कारण बड़े होने पर भी छात्र मौलिक लेखन में समर्थ नहीं पाता।

जहाँ तक प्रारंभिक कक्षाओं की बात है, बच्चे निर्देशों के अनुसार लेखन करते हैं क्योंकि इस समय उनके हाथ की सूक्ष्म मांसपेषियों के अभ्यास और अनुकूलन एवं स्मरण क्षमता को पुष्ट करने का समय होता है। यहाँ प्रयास होता है कि छोटे–छोटे परिचित वाक्यों से लेखन शुरू किया जाय एवं शब्द से होते हुए वर्ण तक पहुँचा जाय। इस स्तर पर बच्चा ध्वनि से प्रतीक चिह्न को जोड़ता है तथा उस प्रतीक चिह्न(वर्ण) को मन में पढ़ते हुए लिखने की क्रिया पूर्ण करता है।

मूल्यांकन–

यांत्रिक लेखन क्या है? आप अपनी कक्षा में किस प्रकार का लेखन करना चाहेंगे?

लेखन पद्धति/विधिः– लिखना सिखाने की विधियां निम्नवत है–

(1) सार्थक रेखाएं खीचने की विधिः– यह लेखन योग्यता निर्माण तथा अक्षर विन्यास की षिक्षा के बीच की कड़ी है। रेखाएं हैं– — ँ ा न ? ६ ट ६ ६ 3ा ╒ ८ 0 ॣ ु च श र

(2) खडषःलेखन विधि– सार्थक रेखाओं के पष्चात् इस विधि का अभ्यास ठीक रहता है। वर्ण लिखने के पूर्व उसके आधे हिस्से को अलग–अलग लिखना सिखाया जाता है। अन्त में पूर्ण रूप पर आते हैं। उदाहरणार्थ–

3   ॐ   अ   अ

c   d   क   क

(3) रेखानुसरण विधिः– स्लेट, रेत, कागज या अन्य लिखे हुए वर्ण पर हाथ फेर कर लिखने को अनुकरण विधि कहते हैं। यह सबसे प्राचीन और प्रचलित विधि है। विद्यार्थी स्वयं या अध्यापक उसका हाथ पकड़कर रेखाओं का अनुसरण करते हुए वर्ण के रूप को उभारते हैं। इन रेखाओं या बिन्दुओं पर कलम की गति के संकेत भी दिये जा सकते हैं। अभ्यास पुस्तिकाओं में इस तरह के अनेक उदाहरण दिये जाते हैं।

(4) अनुलेख विधि:– यह रेखानुसरण विधि का अगला क्रम है। इसमें वर्णो को सुन्दर और मोटे लेख में लिख दिया जाता है तथा छात्र उसको देखकर लिखता है, जैसे– क क क ....

(5) स्वतन्त्र लेखन विधि– बिना वर्ण देखे लिखना स्वतन्त्र लेखन विधि है। वर्णों की ध्वनि को सुनकर श्रुतलेख के रूप में भी इन्हें लिखा जाता है।

(6) तुलना विधिः– किसी दूसरी भाषा की लिपि के वर्णों से तुलना करते हुए लिखना। यदि अध्यापक को स्वयं कई लिपियों का ज्ञान है तो वह विद्यार्थी का मार्गदर्शन कर सकता है। गुजराती–बंगाली और देवनागरी के कई वर्ण परस्पर मिलते–जुलते हैं अतः परस्पर तुलना कराकर लिखना सिखाया जा सकता है।

(7) पेस्टालीज की रचनात्मक विधि– इस विधि में पहले वर्ण लेखन में उपयोग होने वाली विभिन्न रेखाओं, वृत्तों आदि का वर्गीकरण कर सिखाया लिया जाता है। यह वर्गीकरण लेखन की सुविधा के अनुसार किया जाता है। उदाहरण के लिए देवनागरी लिपि के वर्णों को इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं–

क– न म ग त ल त्र **ख**– व ब क **ग**– प फ ष

घ– उ ऊ अ आ ओ औ अं अः **ड.**– ट ठ ढ द छ आदि।

(8) मान्टेसरी विधिः– सर्वप्रथम लिखना सिखाने में ज्ञानेन्द्रियों का सहयोग लेने वाली विधि, जिसमें गत्ते, लकडी आदि के कटे अक्षर पर बच्चे अँगुली फेरते हैं तथा बाद में लिखते हैं। छोटे बच्चों के लिए यह रुचिकर विधि है।

(9) जेकॉटॉट पद्धतिः– इसमें बालक स्वयं अपना सुधार करता है। इस विधि में बच्चों के समक्ष पूरा वाक्य रखा जाता है। वे अनुकरण करके एक–एक शब्द को लिखते हैं और मूल से मिलाकर उसकी अषुद्धि का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तथा अनुकरण के पष्चात् उनसे मूल वाक्य लिखवाया जाता है।

अन्य विधियाँ– इसके अतिरिक्त विष्लेषण, संष्लेषण, परम्परागत, समान आकृति वर्णसमूह, चित्राक्षर आदि विधियों का भी उल्लेख मिलता है।

मूल्यांकन–

1– वर्णों पर हाथ फेरकर लिखने की विधि है–

क. खण्डषः लेखन

ख. सार्थक रेखाएं खीचने की विधि

ग. रेखानुसरण

घ. अनुलेख

2– पेस्टालीज की रचनात्मक विधि क्या है, स्पष्ट कीजिए।

3– छोटी कक्षाओं में लेखन की कौन सी विधियां उपयोगी हो सकती हैं?

लेखन पूर्व तैयारीः–

लेखन के लिए बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार करने हेतु लेखन से पूर्व कुछ अभ्यास कराना जरूरी होता है। इन अभ्यासों द्वारा बच्चों के हाथों की मांसपेषियों को मजबूत बनाया जाता है। बच्चों के हाथ एवं आँखों में संतुलन एवं अँगुलियों की पकड़ और उनके संचालन में कुषलता लाने के लिए ये अभ्यास अवष्य कराये जाने चाहिए। ये अभ्यास निम्नवत् हो सकते हैं–

1. मिश्रित बीजों (दाल,चावल,सरसों आदि) को अलग–अलग करवाना।
2. बीज को पतले मुँह वाले बोतल/शीशी में भरवाना।
3. सूई में धागा डलवाना।
4. इंक पैड पर अँगूठे को रखकर (अँगूठे पर स्याही लगाकर) पेपर पर छाप लगवाना। छाप पर जगह–जगह रेखा बिन्दु लगाकर कीट पतंगे,पशु–पक्षी आदि का रूप बना कर और रोचक बनाया जा सकता है।
5. फल–फूल,आयत,वृत्त,पषु–पक्षी आदि के रेखाचित्र और रंग देकर उस आकृति में मनचाहे रंग भरवाना।

6. वर्णों की आकृतियों में रंग भरवाना।
7. किसी चित्र के चार, पाँच या अनेक भागों में काट कर चित्र/आकृति पूरा करवाना।
8. अखबार, पत्रिकाओं से स्वयं चित्र काटना।
9. रेत की पट्टी पर अँगुली से मनचाही आकृति बनवाना।
10. विविध प्रकार की आड़ी, तिरछी, सीधी लकीरें, गोले,अर्धगोले की आकृति बनवाना।

मूल्यांकन–

लिखने के पहले तैयारी से क्या आषय है?

5.2 लिखना सीखने में ध्यान रखने योग्य बातें–

बैठने का ढंगः– लिखना सिखाने के पूर्व सीधे बैठने का अभ्यास कराना आवष्यक है। झुककर बैठने से रीढ़ की हड्डी टेढ़ी हो जाती। इसके अतिरिक्त आँखों पर अधिक बल पड़ता है। यदि चौकी,पीढ़ा,टेबल आदि न हो तो भूमि पर बायाँ घुटना मोड़कर, बज्रासन में बैठकर दायें जंघे पर स्टेल या कॉपी रखकर लिखना चाहिए। कॉपी किसी आधार पर रखनी चाहिए एवं आधार भी सीधा होना चाहिए। कॉपी को टेढ़ा करके लिखना गलत आदत है।

दूरीः– सीधे बैठकर पटिया,स्लेट या कॉपी को आँखों से 35 सेंटीमीटर या 14 इंच की दूरी पर रखकर लिखना चाहिए।

कलम पकड़ने के तरीके– कलम को सही तरीके से पकड़ा जाय। कलम तर्जनी मध्यमा और अंगूठे के बीच हो और बीच से एक इंच ऊपर हो। कलम इस प्रकार पकड़ी जाय कि अँगुलियों को वर्णों के आकार के अनुसार घुमाया–फिराया जा सके। हाथ को कनिष्ठिका के सहारे पुस्तिका पर घुमाया जाना चाहिए। हाथ की कुहनी शरीर की ओर ही रहनी चाहिए इसे दूर करके तिरछे ढंग से चलाना उचित नहीं है। लिखते समय कलाई घुमाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। कलाई लेखन के साथ आगे चलाया जाना चाहिए। हथेली को तभी पीछे हटाना चाहिए,जब नयी पंक्ति आरंभ करना हो।

शिरोरेखाः– वर्णों के ऊपर लगायी जाने वाली रेखा को शिरोरेखा कहते हैं। वर्णों पर शिरोरेखा का प्रयोग अवश्य होना चाहिए। शिरोरेखा की लम्बाई पूरे वर्ण के दोनों ओर वर्ण की चौड़ाई की 1/3 निकली होनी चाहिए। वर्ण बायें से दाहिने की ओर लिखे जाते हैं। वर्ण पर शिरोरेखा लगाने के बाद मात्रा लगानी चाहिए।

अक्षर की सुडौलताः– देवनागरी लिपि में प्रत्येक अक्षर को बनाने का एक विषेष तरीका है। जब अक्षर सही तरीके से बनाये जाते हैं तो वे देखने में सुन्दर, सुडौल लगते हैं। उदाहरण के लिए–

- 'क' वर्ण को बनाये समय यह ध्यान रखना होगा कि 'क' के बीच की पाई के बायीं ओर का भाग पाई के बीचो–बीच और शुंडिका दाहिनी ओर मध्य भाग से निकाल कर मध्य पाई के बराबर लटकाई जायेगी। बायें और दायें दोनों तरफ की मोटाई बराबर होनी चाहिए।

  क क क –ये 'क' को लिखने के गलत तरीके हैं।
- इसी प्रकार 'ख' बनाते समय ध्यान रखना होगा कि'ख' में 'र' का निचला शिरा 'व' के निचले भाग से जोड़कर 'ख' अक्षर बनेगा। 'ख' शुद्ध रूप है तथा 'ख' अषुद्ध रूप ।
- 'ग' में एक छोटी और दूसरी उससे थोड़ी बड़ी पाई और छोटी लाईन में एक गोल घुंडी बनेगी– ।। ग ग
- 'घ' वर्ण को बनवाने के लिए घ के दो मोड़ों में पहला मोड़ पाई के आधे भाग और दूसरा मोड़ भी आधे भाग से शुरू होकर नीचे की खड़ी पाई से थोड़ा ऊपर ही रहेगा। इसकी अन्त पाई दोनों मोड़ों से थोड़ा सा नीचे रहेगी।
- 'ड.' की आकृति 3/4 भाग में ही होगी।

- ➢ 'च' पाई के मध्य भाग में लिखा जाता है।
- ➢ 'छ' का पहला मोड़ पाई के अर्धभाग और दूसरा मोड़ मध्य से चलकर निचली पंक्ति को छूता हुआ नीचे से ऊपर की ओर जाकर मध्य के मोड़ को स्पर्ष करता हुआ पुनः नीचे की ओर मुड़ जाता है।
- ➢ 'ठ' की आकृति 1/3 भाग के बाद वृत्ताकर होकर नीचे की पंक्ति को स्पर्ष करती होनी चाहिए। इसी गोलाकार भाग के ठीक नीचे से स्पर्ष कराकर 'उ' या 'ऊ' की मात्रा लगानी चाहिए।
- ➢ 'थ' और भ में गोलघुंडी षिरोरेखा के बराबर लाकर थोड़ा ऊपर अन्त पाई के मध्य के बराबर में घुमाकर अन्त पाई में जोड़ देते हैं।

इस प्रकार सभी आकृतियों को सही तरीके से लिखने से ही लिपि में सुडौलता आती है। चतुःस्तरीय लेखन से वर्णों सही अनुपात में लिखना आसान होता है।

क

ऊपर और नीचे खाने में मात्राओं के लिए स्थान होता है।

उचित दूरी– वर्णों, मात्राओं, शब्दों पंक्तियों आदि की उचित दूरी लेख में सौन्दर्य लाती है।

1. वर्णों की दूरीः–वर्ण से वर्ण के बीच एक पाई'ा' की दूरी होनी चाहिए, जैसे–'अब'।
2. वर्ण और मात्रा के बीच में भी एक पाई की दूरी होनी चाहिए, जैसे– राम।
3. शब्द से शब्द के बीच की दूरी 'दो पाई' के बराबर होनी चाहिए,जैसे–राम सीता।
4. दो वाक्यों के बीच की दूरी विराम चिह्नों को छोड़कर चार पाई की दूरी के बराबर होनी चाहिए,यथा–मनमोहन आओ। सोहन आओ।
5. एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति की दूरी इतनी हो कि ऊपर की पंक्ति के वर्ण के नीचे लगी मात्राएं तथा नीचे की पंक्ति की शिरोरेखा के ऊपर लगी मात्राएं आपस में नहीं मिलें तथा उनके बीच कुछ स्थान बचा रहे।
6. विराम चिह्नों की दूरी दो पाई की दूरी के बराबर होनी चाहिए, जैसे–
   राधा! तुम आओ।

मूल्यांकन–

क– कापी या स्लेट को आंखों से कितनी दूर रखना चाहिए?
ख– लिखते समय सही ढंग से न बैठने पर क्या समस्याएं आ सकती हैं?
ग– विराम चिह्न वर्ण से कितनी दूरी पर होना चाहिए?
घ– चतुस्तरीय लेखन से आप क्या समझते हैं?

लेखन के अभ्यास

सुलेखः– गाँधी जी ने लिखा है ''सुंदर लेख के बिना शिक्षा अपूर्ण है।'' सुंदर लेख ही सुलेख है। स्पष्ट,पठनीय एवं आकर्षक लिखावट सुलेख की आधारशिला है।

'लिपिः प्रशस्ता सुमनोलतेव
केषां न चेतांसि मुदाकरोति।

अर्थात् सुन्दर लेख सुमन और लताओं की भाँति भला किसके मन को मुग्ध नहीं करते।

आज के तकनीकी युग में जहाँ हाथ से लिखना कम हो गया है सुलेख पर अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है तथापि सुलेख का महत्व पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। अभी भी परीक्षाओं में यह अच्छे नंबर दिलाने में तथा लेखन को पढ़ने की रुचि जगाने में सहायक होता है।

सुलेख की विशेषताएंः–

- ➢ वर्णों की सुडौल आकृति,वर्णों की उचित लम्बाई, षिरोरेखा और उनके अंग–प्रत्यंग का सही अनुपात ।

- वर्णों का मानक रूप और शुद्ध वर्तनी।
- वर्ण से वर्ण तथा शब्द से शब्द के बीच की सुनिष्चित दूरी।
- पृष्ठ के अगल–बगल तथा ऊपर–नीचे हासिया।
- बहुत धीमी गति से लिखा जाने वाला सुलेख अपना महत्व खो देता है।
- चतुःस्तरीय लेखन अभ्यास।
- सुवाच्यता,सुन्दरता और उचित गति।

अनुलेखः– अनुलेख का तात्पर्य उस लेख से है ,जिसे छात्र किसी नमूने को देखकर लिखता है । अनुलेख के लिए प्रायः अभ्यास–पुस्तिकाओं में ऊपर की एक पंक्ति में कुछ वर्ण,षब्द या वाक्य लिखे होते हैं। नीचे की पंक्तियाँ रिक्त पड़ी रहती हैं। छात्र उन्हें देख–देख कर रिक्त पंक्तियों के बीच स्वयं लिखते हैं। हस्तलेख सुधार में अनुलेख का विषेष महत्व है।

श्रुतलेखः– सुनकर लिखे हुए लेख को 'श्रुतलेख' कहते हैं। अध्यापक या कोई छात्र बोलता है एवं अन्य छात्र उसे लिखते हैं। इसमें अध्यापक केवल सुलेख पर नहीं बल्कि उसके साथ ही शुद्ध लेख,स्पष्ट लेख तथा उचित गति के साथ रहता है। शीघ्रता,सुन्दरता और शुद्धता के साथ लिखा हुआ लेख ही वास्तव में श्रुतलेख' है। श्रुतलेख के उचित अभ्यास से बच्चों की श्रवणेन्द्रिय,दृष्येन्द्रिय तथा हाथ की अँगुलियों के संतुलन का अभ्यास होता है। साथ ही वर्तनी आदि की जानकारी का मूल्यांकन भी हो जाता है।

मूल्यांकनः– सुलेख और अनुलेख का मूल्यांकन लेखन के साथ–साथ ही चलते रहना चाहिए। वर्णों को बनाने, मात्रा लगाने, षिरोरेखा लगाने,विराम चिह्नों के प्रयोग, हासिया, वर्ण से वर्ण, शब्द, वाक्य की दूरी आदि बिन्दुओं पर अध्यापक को सचेत रहना होगा। आवष्यकता पड़ने पर संषोधन तुरंत होना चाहिए। केवल गलत चिह्न लगाकर कर ही छोड़ देना ठीक नहीं बल्कि शुद्ध करके लिखना होगा।

श्रुतलेख में मूल्यांकन का विषेष महत्व है। इसमें वर्णों की बनावट, लिखने का तरीका, वर्तनी की शुद्धता– सभी पर ध्यान रखना आवष्यक है। जिन शब्दों में अषुद्धियाँ अधिक होती हैं, उन पर अलग से अभ्यास जरूरी होता है।

संस्कृत

पाठ–1
विषय–आस–पास की वस्तुओं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम की जानकारी

उद्देश्य–

- संस्कृत भाषा सीखने की प्रक्रिया से अवगत कराना एवं प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करना।
- आस–पास की वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम सिखना।
- संस्कृत भाषा से जोड़कर उसके संस्कृत शब्द का प्रयोग कराना।
- भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में उपयुक्त संस्कृत के शब्दों का ज्ञान कराना।

सामान्यतया बच्चे आस–पास की वस्तुओं और पशु–पक्षियों से परिचित होते हैं बच्चे इन वस्तुओं और पशु–पक्षियों के आंचलिक/हिन्दी नाम की जानकारी रखते हैं। चूँकि व्यवहार में संस्कृत न होने से बच्चे संस्कृत नाम से अपरिचित होते हैं। अतः प्रशिक्षु बच्चों को परिवेशीय वस्तुओं जैसे–पेड़–पौधे, खेल–खलिहान बाग–बगीचे आदि तथा पक्षियों के नाम जैसे–कौआ गाय, सिंह, बानर, आदि के नाम को संस्कृत में चित्र द्वारा बातचीत करके उनके संस्कृत शब्द को बताकर उसका बोध करा सकते हैं जिससे बच्चे उन नामों से जुड़कर उसका प्रयोग संस्कृत में कर सकते हैं।

शिक्षण विधियाँ /तरीके

1. वार्तालाप विधि
2. चित्र विधि
3. प्रश्नोत्तर विधि
4. छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा
5. प्रोजेक्ट विधि

1. वार्तालाप विधि– प्रश्न यह है कि संस्कृत सीखने–सिखाने के लिए कौन सी विधि अपनायी जाय जिससे छात्र सहजता एवं सरलतापूर्वक ग्रहण कर सके तथा संस्कृत भाषा में वार्तालाप करने के लिए प्रेरित हो सके इसके लिए वार्तालाप विधि श्रेष्ठ मानी जाती है। वार्तालाप या बातचीत अपने आप में एक ऐसी विधि है जो किसी भी भाषा को सीखने एवं उसे मजबूती प्रदान करने में सरलता से मदद करती है।

संस्कृत सीखने–सीखाने के लिए भी प्रशिक्षु सर्वप्रथम इसी विधि का चयन करें। भाषा सीखने के चरण पढ़ना लिखना, बोलना, सुनना के आधार पर पहले प्रशिक्षु आस–पास की वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम बताये।

- कक्षा में सुगमकर्त्ता आस–पास की वस्तुओं, पशु–पक्षियों दैनिक व्यवहार, शिष्टाचार से सम्बंधित संस्कृत शब्दों में बातचीत करें। इसके बाद सुगमकर्त्ता बच्चों को दो समूहों में बाँटकर उसकी आस–पास की वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के नाम स्थानीय बोली के माध्यम से एक समूह से

बुलवाये तथा दूसरे समूह से उन वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम बोलने को कहे इस तरह बच्चे उनके संस्कृत नाम से जुड़ जायेंगे।

- कुछ ऐसे शब्द अपने तद्भव और तत्सम रूप में दैनिक रूप में प्रयोग एक एक जैसे होते हो उनको बताये। जैसे–

कउवा	कौआ	काकः
कुकुर	कुक्कुर	कुक्करः

- बातचीत में एक कक्षा के बच्चों को चार समूह में बांटकर प्रत्येक समूह को वर्गीकृत वस्तुओं को प्रशिक्षु बोलने के लिए प्रेरित करें जैसे–किसी एक समूह के बच्चों को घर में पायी जाने वाली वस्तुओं के नाम। दूसरे समूह के बच्चों को खेल सामग्रियों के नाम तीसरे समूह के बच्चों को वस्तुओं के नाम, चौथे समूह में पुष्पों के नाम को बोलने के लिए प्रेरित करें। प्रशिक्षु समूह में आये हुए शब्दों, वस्तुओं के नाम संस्कृत रूप में बोलने को कहे इसी प्रकार के समूह का विभाजन करते हुए बच्चों से बुलवाये।
- बातचीत को आगे बढ़ाते हुए प्रशिक्षु आस–पास की वस्तुओं और पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम जो हिन्दी नाम में समानता रखने वाले हों उन शब्दों को सुनाने व बुलवाने का वातावरण तैयार कर सकता है।

समानता वाले शब्दः–

हिन्दी नाम	**संस्कृत नाम**	**हिन्दी नाम**	**संस्कृत नाम**
पुस्तक	पुस्तकम्	छात्र	छात्रः
कलम	कलम्	बालक	बालकः
विद्यालय	विद्यालयः	वानरः	वानरः

चित्र विधिः–

चित्र विधि से बच्चे चित्र को देखने के बाद सहज रूप से विषय से जुड जाते हैं एवं प्रशिक्षु आसानी से अपनी बात को समझा लेता है। चित्रविधि से आस–पास की वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम से परिचित कराने के लिए चित्र में दिख रहे जानवरों, पशु–पक्षियों, घरेलू एवं आस–पास के सामनों का नाम बच्चों से प्रशिक्षु पूछे एवं उन हिन्दी नाम को क्रम से संस्कृत नाम के रूप में बातचीत के माध्यम से परिचित कराये।

- मनुष्य का चित्र बनाकर उसके अंगों के संस्कृत नाम की जानकारी बच्चों को दी जा सकती है जैसे– केशः ललाटः, नेत्रम्, दन्तः ओष्ठः, नखः हस्तः नाभिः उरूः जानुः, चरण आदि।

प्रश्नोत्तर विधिः–

बच्चे स्वाभाविक रूप से चित्र को देखकर प्रश्न करते हैं एवं प्रशिक्षु प्रश्न करने का उन्हें पर्याप्त मौका देते हुए बच्चों के दो समूहों का गठन करें। एक समूह दूसरे समूह को आस–पास की वस्तुएँ एवं पशु–पक्षियों को दिखाते हुए उसका संस्कृत नाम पूछेगा ? हो सकता है कि दूसरा समूह कुछ वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के संस्कृत नाम नहीं बता सके तो प्रशिक्षु स्वयं संस्कृत नाम बताये एवं यह क्रम समूह में बदल–बदल करके बार–बार कराने से बच्चे संस्कृत नाम से जुड़ जायेंगे।

उदाहरण–

- वस्तुएं दिखाकर– ☐ अंय कः ?
- किताब दिखाकर ☐ – इदं किम् ?
- गेंद दिखाकर ☐ – इदं किम् ?

प्रोजेक्ट विधिः–

प्रशिक्षु आस–पास की वस्तुओं का वर्गीकरण कर शीर्षक एवं उपशीर्षक का निर्माण करें और बच्चों से करायें जैसे–

शीर्षक – अस्माकं परिवेशः

उपशीर्षक – अस्माकं जीव जन्तव – गौः वृषभः काकः मीनः

अस्माकं वृक्षाः – आम्रः जम्बुः कदली

अस्माकं यातायात साधनानि– रेलयानम्

➢ प्रशिक्षु शीर्षक के अनुसार वस्तुओं एवं आस–पास के पशु–पक्षियों के नामों कीसूची बच्चों से तैयार कराये। जैसे–पुस्तक, हाथी कोयल, गाय,

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वाराः–

अलग–अलग सूची बनाकर प्रशिक्षु वाक्यों निर्माण करा सकता है–

1. वस्तुओं की सूची
2. पशु पक्षियों की सूची

➢ सूची में आये हुए शब्दों से उचित क्रिया के माध्यम से छोटा–छोटा वाक्य का निर्माण कराये। संस्कृत नाम में इकारान्त अकारान्त शब्दों की पृथक–पृथक सूची बच्चों से तैयार कराये एवं श्यामपट्ट पर लिखने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।

➢ **मूल्यांकन**–

1. रिक्त स्थान की पूर्ति करिये।

➢ ––––––––– पठामि ।
पशु–––––––पश्यामि।

2. चित्र से सुमेलित करिये–

रामः	☐	सिंह का चित्र
पुस्तकम्	☐	बालिका का चित्र
दुग्धम्	☐	पुस्तक का चित्र
सीता	☐	दुग्ध का चित्र
	☐	

सिंह बालक का चित्र

3. चित्रों के माध्यम से हिन्दी नाम बतायें–

मयूरः ☐

हंसः ☐

मृगः ☐

मार्जारी ☐

गजः ☐

4. बच्चों द्वारा अपने आस–पास से संग्रहीत किये गये चित्रों के माध्यम से

5. बच्चे अपने घर, पास–पड़ोस से फल फूल सब्जी जो भी चित्र उपलब्ध हो, उनको संग्रहीत करें। अध्यापक बच्चों की सहायता से चित्रों को एक चार्ट पेपर पर चिपका दें।

ग्राम : ☐ अजा ☐ सिंह ☐

ओदनम् ☐ द्विदलम् ☐

पाठ–2
विषय–संज्ञा लिंग एवं वचन की जानकारी

संज्ञा–

बच्चे आस–पास को वस्तुओं, व्यक्तियों, पशु–पक्षियों के नाम की जानकारी होने से संज्ञा से पूर्ण रूप से जुड़े होते हैं किन्तु व्याकरणिक पक्ष से पूरी तरह अनभिग्य होते हैं अतः उन व्याकरणिक पक्षों को आधार बनाते हुए प्रशिक्षु संज्ञा समझ को विकसित करा सकता है। उसे कक्षा कक्ष में उपस्थित सभी चीजों को बताकर बच्चों से बोलने को कह सकता है। जिससे बच्चे उन्हें शब्द रूप देने में सफल हो सकते हैं। बहुत सी वस्तुएँ, नाम, उस जगह का नाम पशु–पक्षियों के नाम का चित्र आदि बताकर संज्ञा को आत्मसात् करा सकते हैं।

उद्देश्य–

- संज्ञा की समझ विकसित करना।
- विभिन्न परिस्थितियों में संज्ञा के शब्दों को स्पष्ट करना
- संज्ञा के माध्यम से बच्चों में संस्कृत ज्ञान को बढ़ावा देना।
- संस्कृत में वाक्य कौशल का विकास करना।
- संज्ञा के विविध स्वरूपों से परिचित कराना।

शिक्षण विधियाँ/तरीके–

- बातचीत के द्वारा (वार्तालाप विधि)
- चित्रों के द्वारा
- प्रश्नोत्तर विधि
- दिनचर्या में आने वाले शब्दों के द्वारा
- छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा।

वार्तालाप विधि–

प्रशिक्षु संज्ञा समझ विकसित करने के लिए बच्चों से वार्तालाप विधि अपनाये एंव आस–पास की वस्तुओं, जीव–जन्तुओं के संस्कृत नाम पर विस्तृत चर्चा करें। जैसे–गृहम, गौः, काकः, कुक्कुरः आदि। चर्चा के दौरान बच्चों को कक्षा–कक्ष में उपलब्ध सामानों के बारे में चर्चा करते हुए वाह्य सामानों पर भी विस्तृत रूप से बातचीत करें। जिससे बच्चे उसमें रूचि लते हुए अधिकाधिक शब्दों को खुद बताने लगे। संज्ञा के व्याकरणिक पक्ष को मजबूत करने के लिए वस्तुओं का वर्गीकरण करते हुए संज्ञा भेद को स्पष्ट किया जा सकता है। बच्चों से उनकी रूचि के अनुसार खेलों पर भी चर्चा करें ।

जैसे– क्रिकेट के बारे में।

स्थान	–	वाराणसी
वस्तु	–	ट्राफी
नाम	–	रामः

कक्षा में बच्चों के नाम सामग्री व अन्य बातें

मोहनः	जया
रहीमः	शहनाज

फलम् पुष्पम् पुस्तकम्–श्यामपट्टः सुखाखण्डः, शिक्षकः आम्रः गुलाबः संस्कृत गंगाः, हिमालयः कुतुबमीनार, शुकः आदि। शुकः मृगः चटकाः इन शब्दों को संज्ञा भेद को ध्यान में रखते हुए निम्न प्रकार से विभाजन किया जा सकता है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**
मोहन, जाया, रहीम, शहनाज	पुष्पम्, पुस्तकम्, कलमम्, श्यामपट्टः सुधाखण्डः, गंगाः हिमालयः, कुतुबमीनार शुकः मृगः फलम् चटकाः कन्दुकम्।

- संस्कृत वस्तुओं को आधार बनाते हुए व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा भेद पर बच्चों की समझ को प्रशिक्षु विकसित करा सकता है।
- कक्षा–कक्ष में बच्चों को दो समूहों में वॉटकर। प्रथम समूह से व्यक्तिवाचक संज्ञा से जुड़े शब्दों को प्रशिक्षु बुलवाये एवं दूसरे समूह से जाति वाचक संज्ञा शब्दों को बुलवाये जिससे बच्चों में संज्ञा को समझने में पूर्ण रूप से समझ विकसित होगा।

चित्र विधि द्वारा –

चित्र विधि से संज्ञा समझ एवं संज्ञा भेद को प्रभावी रूप से प्रशिक्षु बच्चों मं विकसित कर सकता है। बच्चे चित्र को देखकर स्वाभाविक रूप से कुछ न कुछ सोचने लगते हैं। प्रशिक्षु उनके मन में चल रहे वस्तु से सम्बधित चित्र (विषय) पर अभिव्यक्ति करने के लिए वातावरण तैयार कर सकता है। उदाहरण स्वरूप–

नाम चित्रः–

काकः	☐	हिमालयः	☐	नकुलः	☐
सिंहः	☐	आलुः		मच्छिकाः	
गजाः	☐	पुष्पम्	☐	अजाः	☐

प्रशिक्षु प्रस्तुत चित्र के माध्यम से बच्चों से संज्ञा शब्द पूछ सकता है एवं संज्ञा शब्द के द्वारा किसका चित्र हैं।

इस प्रकार बच्चों से चित्र के द्वारा बातचीत कर संज्ञा समझ को विकसित करने मं मदद मिल सकती है। साथ ही शब्दों का व्यक्ति विशेष एवं जाति विशेष के रूप में वर्गीकरण कर संज्ञा समझ को स्पष्ट किया जा सकता है।

प्रश्नोत्तर विधि– किसी भी प्रकार के ज्ञान को विकसित करने के लिए प्रश्नोत्तर विधि बच्चों को रूचिकर एवं मजेदार हो सकते हैं। बच्चे स्वाभाविक रूप से प्रश्न करते हैं। अतः प्रश्नोत्तर विधि के द्वारा संज्ञा समझ को प्रशिक्षु आसानी से मजबूत कर सकता है। जैसे–परिचयात्मक प्रश्न

प्रशिक्षु– तव किं नाम?
तव मातुः नाम किं?
तव पितुः नाम किं?
त्वं कुत्र निवससि ?
तव विद्यालयस्य नाम किं ?

यह भी हो सकता है कि छात्र उत्तर न दे तो प्रशिक्षु स्वयं मम नाम राजेशः कहकर उससे प्रश्नोत्तर विधि से जोड़े। इस प्रकार प्रश्नोत्तर विधि के बाद उत्तर में आये हुए राजेशः सीता वाराणसी प्राथमिक विद्यालय चिरईगाँव इत्यादि शब्दों से संज्ञा समझ विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार परिचयात्मक प्रश्न करकर प्रशिक्षु उसके दायरे को बढ़ते हुए संज्ञा के विस्तृत स्वरूप पर कार्य कर सकता है।

प्रश्नोत्तर विधि से प्रशिक्षु बच्चों का समूह बनाकर पूछें। बालसभा, प्रतियोगिता के माध्यम से भी संज्ञा समझ को विकसित किया जा सकता है।

दिनचर्या में आने वाले शब्द–

बच्चे प्रतिदिन जिन कार्यों को दिनचर्या में है। उन कार्यों के बारे में चर्चा करते हुए प्रशिक्षु संज्ञा शब्दों के ज्ञान को प्रभावी रूप से विकसित कर सकते हैं। इसमें प्रशिक्षु बच्चों से कार्यों के बारे में पूछेगा एवं उनके द्वारा बोले गये शब्दों को श्यामपट्टः पर लिखेगा। जैसे–

1. दन्तधावनम्
2. दुग्धम्
3. स्नानम्
4. वस्त्रम्
5. भोजनम्
6. विद्यालय्

छोटे–छोटे वाक्य के द्वारा–

छोटे–छोटे वाक्यों के माध्यम से भी संज्ञा समझा को विकसित किया जा सकता है। छोटे–छोटे वाक्य निर्माण उन बच्चों के क्रियाकलापों से जुड़े हों। सरल संस्कृत शब्दों का प्रयोग प्रशिक्षु स्वयं करें।

जैसे–

दन्तधावनम् करोमि।
दुग्धम् पिबामि।
वस्त्रम् धारयामि।
पुस्तकम् पठामिं।
साकं खादामि।
चल चित्रम् पश्यामि।
कलमम् आनय।

पुस्तकम् आनय –जैसे वाक्येां में आये संज्ञा शब्दों को रेखांकित कराकर भी बच्चों में संज्ञा समझ को विकसित किया जा सकता है।

प्रोजेक्ट विधि–

प्रशिक्षु आस–पास की वस्तुओं व संज्ञा का वर्गीकरण कर शीर्षक एवं उपशीर्षक का निर्माण करें और बच्चों से उस पर कार्य करायें।

जैसे– चार्ट बनवाकर –

1. जाति वाचक संज्ञा
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा

शीर्षक–स्थान वाराणसी

उपशीर्षक–विभिन्न छोटे–छोटे स्थान (सुजावनपुर गाँव)

- प्रशिक्षु शीर्षक के अनुसार संज्ञा नामों की बच्चा से सूची बनवाये। सूची में आये हुए नामों से छोटे–छोटे वाक्य का निर्माण कराये। उसे पृथक–पृथक श्यामपट्ट पर लिखने को कहे। इस प्रकार बच्चे प्रेरित होकर और उसके प्रति रूचि लेंगे।

मूल्यांकन कार्य–

प्रशिक्षु समय–समय पर आस–पास की वस्तुओं और संज्ञा के नाम की दी जानकारियों पर मूल्यांकन करें।

विधि –

(1) छांटकर खोजिए एवं लिखिए –

वस्तुओं व पशु–पक्षियों के नाम वर्गों में बांटकर खोजना एवं लिखना।
जैसे–पुस्तकम्–सिंहः

(2) सुमेलित करिये–

हिन्दीनाम	संस्कृत नाम
कौआ	काकः
बैल	वृषभः
कुन्ता	वानरः
कलम	कलमम्
वानर	कुक्कुरः

3. रिक्त स्थान की पूर्ति करिये– चित्र दिखाकर

अयं कः? ☐

इदं कः? ☐

इद कः? ☐

4. दो समूह बनाकर चार्ट बनाइए।

जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा

लिंग की जानकारी :–

बच्चे माता–पिता, चाची, चाचा, दादा–दादी, भैया दीदी इत्यादि परिवेश में व्यवहृत होने वाले शब्दों से लिंग का आंचलिक ज्ञान से परिचित होते हैं। साथ ही साथ परिवेश से ही माता कहती हैं पिता कहते है जैसे वाक्यों का प्रयोग करने से स्पष्ट है कि बच्चे लिंग के व्यावहारिक पक्ष को जानते हैं। किन्तु लिंग के व्याकरणिक स्वरूप एवं संस्कृत से जुड़े लिंग की समझ को विकसित करने के लिए स्त्रीलिंग पुलिंग, नपुंसकलिंग, शब्दों का वर्गीकरण एवं किया से उनके प्रयोग कराने से लिंग स्पष्ट हो जाता है।

उद्देश्यः–

- लिंग की समझ विकसित करना।
- भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में लिंग भेदों के ज्ञान का विकास करना।
- संस्कृत में लिंग के वाक्य कौशलों का विकास करना।

शिक्षण विधियाँ/तरीके –

- बातचीत द्वारा (वार्तालाप विधि)
- चित्रों के द्वारा
- प्रश्नोत्तर विधि द्वारा
- छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा
- प्रोजेक्ट विधि

वार्तालाप विधि –

बातचीत के द्वारा लिंग का ज्ञान बताकर कर सकते हैं। जैसे– माता, पिता, पुष्पम्।

वर्गीकरण कराकर बच्चों से बातचीत किया जा सकता है–

स्त्रीलिंग	पुलिंग	नपुंसक लिंग

सीता	रमेशः	पुष्पम्
राधा	मोहनः	कमलम्
ममता	सोहनः	पत्रम्

चित्रों के द्वाराः–

चित्र विधि से लिंग भेद को स्थायी रूप से प्रशिक्षु बच्चों में विकसित कर सकता है। बच्चे चित्र में बने लिंगों को देखकर तुरन्त उसका उत्तर देने लगेंगे और इस प्रकार वातावरण सृजन से लिंग की स्पष्टताः स्वतः हो जायेगी ।

जैसे–

स्त्री का चित्र ☐ पुरूष का चित्र ☐

लड़की (बालिका) का चित्र ☐ बालक का चित्र ☐

पुष्प का चित्र ☐

प्रश्नोत्तर विधिः–

इस विधि का प्रयोग कर प्रशिक्षु बच्चों में स्वाभाविक रूप से लिंग के स्पष्ट कर सकता है।

जैसे– चित्र दिखाकर

सः पठति	बालक का चित्र पढते हुए (पुलिंग)	☐
सा क्रीडति	बालिका का चित्र खेलते हुए (स्त्रीलिंग)	☐
पत्रम्–पतति	वृक्ष से पत्ते गिरते हुए नपुंसकलिंग	☐

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वाराः–

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा लिंग की समझ को प्रशिक्षु बच्चों मं विकसित कर सकता है

जैसे–

जैसे– ..... विकसति। (पुष्पम्, कलमम्)

त्वम् ———————— असि । (छात्राः, छात्रः)

त्वम ———————— असि। (बालकः, बालिकाः)

कक्षा में तीन समूह बनवाकर प्रत्येक समूह से तीनों लिंगों के एक–एक शब्द पूछकर उससे सम्बन्धित वाक्य बनवाये जैसे– राम, सीता, पुष्पम्।

क्रिया के साथ प्रयोग कराकर लिंग को स्पष्ट किया जा सकता है।

स्त्री लिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग (प्रयोग कराकर)	पुलिंग (प्रयोग कराकर)
सा	सः	सा गतवति	सः गतवान्
भगिनी	भ्रातः	भगिनी याचितवती	भ्रातः याचितवान्
माता	पिता	माता उपदिष्टवती	पिता उपदिष्टवान्

सर्वनाम् में आये अहं त्वम् ये दोनों शब्द स्त्रीलिंग और पुलिंग दोनों में समान रूप से व्यवह्यत होते है।

प्रोजेक्ट विधिः–

प्रशिक्षु लिंगों का वर्गीकरण कर चित्र ।निर्माण करा सकता है। प्रशिक्षु स्वयं चित्र बनाये और बच्चों से बनवाये। बच्चों के तीन समूह बनवाकर एक समूह पुलिंग के (कक्षा में जितने बालक है) के दूसरा समूह। स्त्रीलिंग (कक्षा में जितनी बालिका है) के तीसरा समूह नपुंसक लिंग के (कक्षा में टंगी हुई सामग्री)।

जैसे राम आदि सीता आदि पुष्पम् आदि।

मूल्यांकन – प्रशिक्षु समय–समय पर बीच में मूल्यांकन कर उसको स्पष्ट करा सकता है। जिससे बच्चे उसे रूचिपूर्ण ढंग से करने के लिए प्रेरित हो जावेंगे।

1. उचित विकल्प छांटिएः–

पुष्पम्	–	(पतन्ति, विकसति)
मित्रम्	–	(गच्छन्ति, पतन्ति)
चक्रे	–	(भ्रमतः, गच्छति)

2. रिक्त स्थान की पूर्ति–

पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
बालकः	———	———
———	रमा	———
———	———	फलम्

3. सुमेलित कराकर–

कमल	वृक्षम–
पेड़	कमलम्
चश्मा	उपनेत्रम्
कमला	रमेशः
रमेश	कमला

4. स्त्रीलिंग और पुलिंग शब्दों का वर्गीकरण कर उसका क्रिया के साथ प्रयोग कराना।

स्त्रीलिंग	**पुलिंग**	**स्त्रीलिंग**	**पुलिंग**
सा	सः	सा———	सः———
स्त्री	पुरूष	स्त्री———	पुरूषः———
छात्रा	छात्रः	छात्रा———	छात्रः———

वचन की जानकारी –

परिवेश से ही बच्चों को एक दो तीन, चार इन संख्याओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इन संख्याओं का बोध कराने वाले व्याकरण के शब्दों से बच्चों को जोड़कर उनको वचन की समझ को विकसित किया जा सकता है। बच्चे अपने दैनिक जीवन में वचन का प्रयोग करते हैं। प्रशिक्षु किसी एक वस्तु को दिखाकर एक वचन दो वस्तुओं को दिखाकर द्विवचन तथा बहुत सी वस्तुओं को दिखाकर बहुवचन का बोध करा सकता है। किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध वचन द्वारा होता है।

उद्देश्य–

- वचन की समझ विकसित करना
- भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में वचन की दक्षता विकसित करना।
- संस्कृत में वचन का वाक्य बोध कराना।

शिक्षण विधियाँ /तरीके–

- बातचीत द्वारा
- चित्र विधि द्वारा
- प्रश्नोत्तर विधि
- छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा
- प्रोजेक्ट विधि

मूल्यांकन

वार्तालाप विधि–प्रशिक्षु वार्तालाप विधि को अपनाकर वचन की समझ को विकसित करने में मदद कर सकता है उसके संस्कृत व हिन्दी के वचनों को कक्षा में प्रयोग कर बच्चों से वचन को स्पष्ट करा सकता है जैसे–एकः, द्वि बहवः एकवचन, द्विवचन, बहुवचन

चित्र विधि द्वारा –

वचन को स्पष्ट करने के लिए चित्रविधि सबसे उपयुक्त है। चित्र को दिखाकर प्रशिक्षु बच्चों को वचन का ज्ञान स्पष्ट करा सकता है जैसे–

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
काकः 1	काकौ 11	काकाः 1111

प्रशिक्षु बच्चों से शब्द देकर तीनों वचनों में शब्द सूची सभी लिंगों में बनवा सकता है।

जैसे–	**बालकः**	**बालिका**	**पुष्पम्**
	एकः	द्वि	बहवः
पुलिंग	बालकः	बालकौ	बालकाः
स्त्रीलिंग	बालिका	बालिके	बालिकाः
नपुंसक लिंग	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पणि

प्रश्नोत्तर विधिः–

वचन की समझ को विकसित करने के लिए प्रश्नोत्तर विधि प्रयोग कर सकते हैं जैसे–

कति फलानि त्रीणि फलानि

कः आगच्छति राम, सोहनः, कृष्ण

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वाराः–

छोटे–छोटे वाक्यों के द्वारा संज्ञा व सर्वनाम के सभी वचनों का ज्ञान कराया जा सकता है।

जैसे	संज्ञा	–	बालकाः पठति।
	सर्वनाम	–	सः पठित।
	संज्ञा	–	बालिका गच्छति।
	सर्वनाम	–	सा गच्छति।
	संज्ञा	–	पत्रम् पतति।
	सर्वनाम	–	तत् पतति।

प्रोजेक्ट विधिः–

बच्चे चित्र में बनी हुई चीजों को अलग–अलग गीने तथा एक दो और अनेक की संख्या के आधार पर इन शब्दों को लिखों प्रशिक्षु इसे वर्गीकृत करा सकता है।

जैसे– चित्र कलम एक वचन ☐

कलम द्विवचन ☐

कलम बहुवचन ☐

प्रशिक्षु बच्चों से तीन समूह में चार्ट बनवाकर वचन को स्पष्ट कर सकता है। इस संज्ञा व सर्वनाम में अलग–अलग चार्ट बनवा सकता है।

जैसे–	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	☐	☐	☐

मूल्यांकन –

सही/गलत

बालकः – (नमति, नमन्ति)

छात्रः – (पठति, पठन्ति)
तौ – (हसन्ति हसतः)
बालिके – (नमतः नमन्ति)

रिक्त स्थान की पूर्ति–

अश्वौ तीव्रं ———————— ।
छात्राः ———————— ।
सः गजः ———————— ।

सुमेलित कराकर –

बालकः हसति	द्विवचन
छात्रौ पठतः	एकवचन
ते अश्वौ धावन्ति	बहुवचन

पाठ–3

विषय–संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों के सभी विभक्तियों तथा वचनों का ज्ञान

संज्ञा शब्द से बच्चे अपने आस–पास व परिवेश से पहले से जुड़े होते हैं उन संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग होने वाले सर्वनामों को भी बच्चे प्रतिदिन दिनचर्या में प्रयोग करते हैं प्रशिक्षु पहले संज्ञा व उसके स्थान पर प्रयोग होने वाले सर्वनाम शब्दों की विस्तृत चर्चा करें। उसके व्याकरणिक पक्षों को स्पष्ट करते हुए प्रशिक्षु उन्हें विभिन्न विभक्तियों और वचनों से परिचित कराये जिससे उन्हें वाक्यों में स्पष्टतया प्रयोग कर सके। विभक्तियों के आधार पर वचनों का प्रयोग सरलतापूर्वक करने में समर्थ हो सके यथा अकारान्त (पुलिंग) आकारान्त (स्त्रीलिंग) और नपुंसक लिंग के सभी विभिक्तियों के तीनों वचनों के रूपों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों को प्रयोग कर सकने में दक्षता प्राप्त कर सकें।

उद्देश्यः–

- संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों की समझ विकसित करते हुए विभिन्न विभक्तियों तथा वचनों को स्पष्ट करना।
- संज्ञा एवं सर्वनाम के विविध रूपों एवं उसके परिवर्तित शब्दों के अन्तर को स्पष्ट करना।
- संज्ञा एवं सर्वनाम के अर्थों से परिचित कराना एवं उसके रूप के प्रयोग को सिखाना।

शिक्षण विधियाँ/तरीके–

- वार्तालाप विधि
- चित्र विधि
- प्रश्नोत्तर विधि
- प्रोजेक्ट
- मूल्यांकन

वार्तालाप विधिः–

प्रशिक्षु परिवेश से जुड़े संज्ञा एवं सर्वनाम का ज्ञान कराते हुए विभिन्न वचनों एवं कारकों में परिवर्तित रूपों को स्पष्ट करने के लिए बच्चों के साथ विस्तृत–चर्चा करें। विभक्तियों को बताने के लिए पहले उसके चिह्न पर विस्तृत रूप से बातचीत करें उसे उदाहरण देते हुए समझायें–जैसे–

विभक्ति	चिह्न
प्रथमा विभक्ति	ने
द्वितीया विभक्ति	को
तृतीया विभक्ति	से (के द्वारा)
चतुर्थी विभक्ति	के लिए
पंचमी विभक्ति	से (अलग होने के लिए)
षष्ठी विभक्ति	का की के

सप्तमी विभक्ति		में, पै पर	
सम्बोंधन विभक्ति		हे, ओ अरे।	
जैसे– पुलिंग	बालकः	पठति	सः पठति
	बालकौः पठतः		तौ पठतः
	बालकाः पठन्ति		ते पठन्ति
स्त्रीलिंग	बालिका	पठति	सा पठति
	बालिके	पठतः	ते पठतः
	बालिकाः	पठन्ति	ता पठन्ति

यहाँ प्रश्न उठता है कौन (कः) पठता है अर्थात् पढ़ने का कार्य कौन कर रहा है उत्तर मिलता है बालक/पढ़ता है क्रिया हुई अर्थात् कौन के लिए कर्त्ताकारक प्रथमा विभक्ति हुई। इस तरह प्रशिक्षु विभिन्न विभक्तियों व वचनों को उदाहरण देते हुए कक्षा कक्ष में बातचीत करें।

प्रशिक्षु बच्चों के चार समूहों का निर्माण कर प्रत्येक समूह से प्रथमा द्वितीया, तृतीया एवं चतुर्थी विभक्तियों के रूपों को बोलने का अवसर दे एवं विभक्तियों का क्रम समूहों में बदलते रहे।

चित्र विधिः–

चित्र विधि से संज्ञा शब्दों के विविध रूपों का ज्ञान सरलता से कराया जा सकता है। इस विधि के द्वारा बच्चे चित्रों को देखकर शब्द रूपों को वचनों में आसानी से बदल सकते हैं– जैसे–

वानरः

वानरौः

वानराः

चित्र विधि के द्वारा बदले हुए रूपो के अर्थों का भी चित्र में आये वानरों के वचनात्मक ज्ञान बच्चों को सहज रूप में ज्ञात हो जायेगा। बच्चे वचन के अनुसार क्रिया का प्रयोग भी सरलतापूर्वक चित्र से कर सकते हैं।

जैसे– वानरः खादति
वानरौः खादति
वानराः खादन्ति

इसी तरह कर्मकारक अर्थात–द्वितीया विभक्ति का प्रयोग प्रशिक्षु कक्षा कक्ष में कर सकता है। जैसे–

रामः पुस्तकं पठति
सः पुस्तकं पठति
अर्थात प्रश्न कौन पढ़ता है उत्तर मिलता है राम

प्रश्न राम क्या पढ़ता है उत्तर मिलता है पुस्तक अर्थात् पुस्तक में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग। इसी तरह से और भी प्रश्न करके उत्तर में मिले शब्द को बताकर प्रशिक्षु विभक्तियों व वचनों का क्रिया के साथ प्रयोग करकर इसको स्पष्ट कर सकता है।

प्रश्नोत्तर विधि–

इस विधि से प्रशिक्षु संज्ञा सर्वनामों को स्पष्ट करते हुए उसके विभक्तियों और वचनों के अर्थ को स्पष्ट कर सकता है–प्रशिक्षु प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग परिवेश एवं दिनचर्या में आने वाले क्रियाकलापों का आधार बनाये। जैसे

कौन पढ़ता है ?		कः पठति ? सः पुस्तकं पठति
वह किससे लिखता है ?		अहं कलमेन लिखामि
गुरू जी को नमस्कार है	–	गुरवे नमः

प्रोजेक्ट विधि–

1. परिवेशी संस्कृत संज्ञा शब्दों की सूची बनवाये।
2. अस्मद, युस्मद्, तत् शब्दों की सभी विभक्तियों का चार्ट तैयार कराना।
3. रामाय नमः जैसे प्रयोगों की सूची बनवाना।

मूल्यांकनः–

प्रशिक्षु संज्ञा एवं सर्वनाम के संस्कृत शब्दों के अधिगम को जानते हुए संज्ञा एवं सर्वनाम से सम्बद्ध विभक्तियों की निम्न रूप से मूल्यांकन विधि को अपना सकता है–जैसे

अ को ब से सुमेलित करिये–

अ	ब
वानरौ	खादति
वानरः	खादतः
वानराः	खादन्तिः

1. सत्य/असत्य कथन

निम्नलिखित सत्य कथनों (✓) असत्य कथ पर (×) चिह्न का वाक्य में प्रयोग करें–

रामाय नमः ☐
रामम् उभयतः ☐
ग्रामं निकषा ☐
देवाय प्रति ☐
रामस्य परितः ☐

पाठ–4
विषय–श्लोकों तथा नीति परक वाक्यों का अर्थज्ञान

उद्देश्यः–

- संस्कृत श्लोकों तथा नीतिपरक श्लोकों का अर्थज्ञान कराना।
- संस्कृत श्लोकों को सुनकर उनके भाव को समझने तथा आनन्दानुभूति करने की क्षमता उत्पन्न करना।
- श्लोकों को शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ने की दक्षता का विकास करना।
- बच्चों को नैतिक मूल्यों/जीवन मूल्यों से परिचित कराना एवं दैनिक जीवन में उनके प्रयोग हेतु प्रेरित करना।

प्रशिक्षु श्लोको तथा नीति वचनों से बच्चों में नैतिकता की भावना का विकास करा सकता है जिससे बच्चों में दया, प्रेम व सहिष्णुता की भावना विकसित हो सकती है। बच्चे अपने घर परिवार से ही दया, प्रेम व आपसी सहिष्णुता की भावना को जानते हैं। प्रशिक्षु उन्हें–उन्हीं चीजों का अर्थ बोध शुद्ध उच्चारण पूर्वक करकर और कराकर उनमें नैतिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं।

शिक्षण विधिः–

- नीतिपरक श्लोकों का शिक्षक सस्वर वाचन करें।
- पूरे श्लोक को उचित सुर–लय ताल एवं गति के साथ इस हाव भाव से पढ़ें कि श्लोक का अर्थ स्पष्ट होने लगे।
- चित्रों के द्वारा
- प्रश्नोत्तर विधि
- प्रोजेक्ट विधि

प्रशिक्षु नीति वचनों को उचित आरोह–अवरोह के साथ गाकर बच्चों को सुनाएं जिससे बच्चे उन्हें सुनकर उसके प्रति आकर्षित हों। शुद्ध उच्चारण करते हुए उसे हाव भाव के साथ 'प्रस्तुत' करें जिससे बहुत सारे शब्दों का अर्थ बोध बच्चे स्वयं कर लेंगे अथवा बीच–बीच में उसे बताते चलें। जैसे–

शिक्षक द्वारा उच्चारण	–	अयं निजः परो वेति,	उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।
बच्चों द्वारा उच्चारण	–	अयं निजः परोवेति	
शिक्षक द्वारा उच्चारणं	–	गणना लघु चेतसाम्।	
बच्चों द्वारा उच्चारण	–	गणना लघु चेतसाम्।	

इसी प्रकार श्लोक के शेष दो चरणें का पठन अभ्यास कराएं। बच्चों द्वारा किये जा रहे अशुद्ध उच्चारण का स्वयं शुद्ध उच्चारण करें तथा बच्चों से बार–बार अभ्यास कराएं।

गति विधिः–

शिक्षक श्लोक में आये शब्दों के फ्लैश कार्ड तथा उनके अर्थ के फ्लैश कार्ड दिखाकर शब्द अर्थ स्पष्ट करें।

प्रश्नोत्तर विधिः–

प्रशिक्षु प्रश्नोत्तर विधि द्वारा भी किसी श्लोक का अर्थ बहुत ही सुगमता एवं सहजता के द्वारा स्पष्ट कर सकता है। जैसे–किसी एक श्लोक द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः ।

शुष्क वृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।।

- शिक्षक स्वयं श्लोक का शुद्धता, यति, गति के साथ आदर्श वाचन करेंगे।
- सामूहिक अनुवाचन बच्चों से कराएं।
- एक–एक बच्चे से श्लोक को पढ़वाएं व उनकी उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों को ठीक करायें।
- श्लोक में आये प्रत्येक शब्द का अर्थ बच्चों को बताएँ तत्पश्चात बच्चों से पूछें। न बता पाने पर स्वयं उसका अर्थ श्यामपट्ट पर लिखें तथा श्लोक की अन्य कठिनाईयों का भी निवारण करें।
- श्लोक का अर्थ भी बताएँ तथा ये भी बताएँ कि किस प्रकार के मनुष्य विनम्र नहीं होते ।

शिक्षक प्रश्नोत्तर द्वारा श्लोक को और भी स्पष्ट कर सकता है।

जैसे–

प्रश्न– वृक्षाः कदा नमन्ति ?
उत्तर – वृक्षाः फलिनो नमन्ति।
प्रश्न– कीदृशा जनाः नमन्ति ?
उत्तर– गुणिनो जनाः नमन्ति ।
प्रश्न– कीदृशाः जनाः न नमन्ति ?
उत्तर– मूर्खाः जनाः न नमन्ति ।
प्रश्न– कीदृशाः वृक्षाः न नमन्ति ?
उत्तर– शुष्क वृक्षाः न नमन्ति ।

चित्रों के द्वारा–

चित्र को दिखाकर प्रशिक्षक विभिन्न भावों का अर्थबोध करा सकता है। वह चित्र को दिखाते हुए उसके बारे में अर्थ का भाव बता सकता है। इस प्रकार बच्चे चित्र को ध्यानपूर्वक देखकर उसके भाव को समझ सकते हैं। बच्चे परिवेश से ही इन चीजों को जानते है। वे घर–बाहर (भाई–बहन मित्र) सभी जगह उनका प्रयोग करते हैं। उनके अन्दर दया करूणा जन्म से प्राप्त हैं उन्हें प्रशिक्षक उभारकर उनमें दया की भावना भर सकता है। इसी प्रकार शिक्षक परोपकार के बारे में चित्रों के माध्यम से बताते हुए बच्चों में इस भावना को जागृत करते हुए यह बता सकता हैं कि मनुष्य का यह शरीर ही दूसरों का उपकार करने निमित बना हुआ है।

जैसे–

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थं इदं शरीरम् ।।

- प्रशिक्षु सर्वप्रथम श्लोकों का सस्वर वाचन करें/कराएं
- श्लोकों का अन्वय करते हुए भाव स्पष्ट करें।
- श्लोकों को सुन्दर अक्षरों में लिखवाएं।

सूक्तियों का चित्रों से मिलान कीजिएः–

हसं मध्ये बको यथा।
प्रियवाक्यं –प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
वसुधैव कुटुम्बकम्।
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः ।

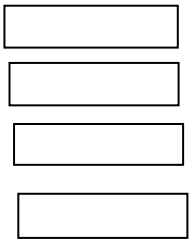

<u>प्रोजक्ट विधि–</u>

प्रशिक्षु बच्चों से नीति वचन/सुभाषितानि की सूक्तियाँ पट्टियों पर हिन्दी/ संस्कृत में लिखवाएँ।

जैसे–

- विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम्।
  सभी धनों में विद्या धन श्रेष्ठ है।
- आचारः परमो धर्मः ।
- आचरण श्रेष्ठ धर्म है।
- सत्यमेव जयति नानृतम् ।
  सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं।

मूल्यांकन/पुनरावृत्ति–

- बच्चों से श्लोक पर आधारित प्रश्न कर अर्थ बोध का मूल्यांकन करें।
- श्लोक पर आधारित चित्र दिखाकर वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें।
- इस श्लोक से हमने क्या सीखा ? बच्चों से स्पष्ट कराएँ।
- श्लोक पट्टियों फ्लैश कार्डों के माध्यम से श्लोक पूर्ण कर उत्तर–पुस्तिका में लिखवाएँ शिक्षक उसका निरीक्षण करें।

पाठ–5
विषय–एक से बीस तक की संस्कृत संख्याओं का ज्ञान

उद्देश्य–

(1) संख्यावाचक शब्दों (गिनतियों का संस्कृत में बोध कराना।

(2) क्रम सूचक संख्या शब्दों को स्पष्ट करना।

(3) सख्याओं को गिनने की दक्षता विकसित करना।

(4) शुद्ध उच्चारण की क्षमता विकसित करना।

विद्यालय आने से पूर्व बच्चे शुरूआती भाषायी दक्षताएँ अपने घर–परिवार में सहज रूप से प्राप्त करते रहते हैं। सीखने की यह क्रिया सीखने–सिखाने का अहसास दिलाये बिना स्वाभाविक रूप से होती है।

प्रशिक्षु का यह पहला दायित्व है कि बच्चों को संस्कृत भाषा को सहजता से सिखाने हेतु उपयुक्त माहौल रचें। ऐसा वातावरण जिसमें अनजाने–अनचाहे भी संस्कृत सीखने की ओर अग्रसर हों। उसे संस्कृत सीखने में मजा आये और वह इस भाषा के साहित्य की आनन्दानुभूति कर सकें।

बच्चे मातृभाषा में संख्याओं से परिचित हैं। संख्याओं को गिनने की दक्षता उनमें है। प्रारम्भ में बच्चे अपने परिवेश से बहुत कुछ सीख लेते हैं जैसे–टाफी, बिस्किट, गोली, खिलौना इन सभी वस्तुओं को वह अनायास ही गिनना सीख लेता है। तथा खेल–खेल में भी संख्याओं (गिनती) के बारे में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त कर लेता है। बच्चों को संख्याओं को गिनने की दक्षता विकसित करने हेतु निम्न शिक्षण विधियों को अपनाया जा सकता है–

1. बातचीत (वार्तालाप विधि)
2. चित्रों द्वारा
3. प्रश्नोंत्तर विधि
4. कहानी विधि

बातचीत द्वाराः–

बातचीत के द्वारा प्रशिक्षु को संख्याओं (गिनती) का बोध बहुत ही आसान तरीके से करा सकता है। प्रशिक्षु कक्षा के एक बच्चे को अपने पास बुलाकर छात्रों को बताएँ–एकः बालकः एक और बच्चे को उसके साथ खड़ाकर कहे– द्वौ बालको इसी प्रकार उन बच्चों के साथ एक–एक बच्चे को जोड़ते हुए बीस तक की संख्याओं का अभ्यास करायें। इसे पहले हिन्दी में तत्पश्चात संस्कृत में अभ्यास कराएँ कक्षा–कक्ष के अन्तर्गत होने वाली सामान्य बातचीत संस्कृत में हाव–भाव के साथ की जाय, जैसे–

- **संख्या बोध गतिविधिः–** कक्षा को दो समूहों में बाँटकर आमने–सामने बैठा दिया जायेगा। प्रत्येक समूह में बच्चों का अपना–अपना क्रमांक निश्चित कर दिया जायेगा। अब समूह एक क्रमांक एक वाला बच्चा हिन्दी में संख्या (एक) बोलेगा तुरन्त दूसरे समूह का क्रमांक एक संख्या (1) एक को

संस्कृत में एकः बोलेगा, इसी प्रकार अन्तिम क्रमांक तक संख्याओं को हिन्दी–संस्कृत में बोलेने की चुनौती दी जायेगी।

अन्त में संख्याओं को घटते क्रम (अवरोही क्रम) में समूह के अन्तिम सदस्य से शुरू करके संख्या (1) एक तक आयेंगे।

उपर्युक्त विधि से संख्याओं को संस्कृत में आरोही–अवरोही क्रम में बोलने का अभ्यास के बाद शिक्षक द्वारा मूल्यांकन हेतु दोनों समूहों से किसी हिन्दी संख्या को संस्कृत में तथा संस्कृत संख्या को हिन्दी में बताने को कहा जायेगा। न बता पाने की स्थिति में अन्यों को मौका दिया जायेगा। इस गतिविधि में स्कोर बोर्ड का प्रयोग कर सकते हैं।

- **गतिविधिः–**बच्चों से अपने बस्ते के अलग–अलग सामानों का नाम लिखकर उनके आगे उनकी संख्या संस्कृत गिनती में लिखें जैसे–

  किताब – षड्

  कलमं –

  पेंसिल –

  कापी –

चित्र द्वारा :–

चित्र विधि से ब च्चों को संख्या (गिनती) का बोध अत्यन्त रोचक विधि से कराया जा सकता है। यह विधि अत्यन्त सरलएवं सुबोध है।

जैसे–

एकः बालकः अस्ति 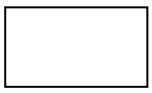

संख्याओं का मिलान चित्रों से कीजिएः–

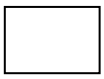 षड्

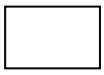 द्वौ

द्वादश

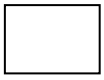 एकादश

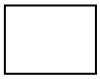 सप्त

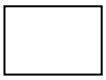 एकः

दी गई संख्याओं को हिन्दी में लिखिए :–

त्रयः मण्डूका ———तीन मेढक

चत्वारः मत्स्याः———————————

दश शुकाः———————————————

प्रश्नोत्तर विधिः–

प्रश्नोत्तर विधि द्वारा प्रशिक्षु संख्या बोध बहुत ही सरलतम् ढंग से करा सकता है। इस विधि द्वारा शिक्षण के समय छात्रों में बराबर सक्रियता बनी रहती है। इसमें प्रश्नोत्तर संस्कृत में ही किया जाता है। पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्रों के शिक्षण में प्रायः इन्हीं विधियों का प्रयोग होता है।

जैसे–विद्यार्थी दिनचर्या पर प्रश्नोत्तर किया जा सकता है।

प्रश्न– विद्यार्थी कदा जागर्ति

उत्तर– विद्यार्थी प्रातः पंच वादने जागर्ति

प्रश्न– सः कदा खेलति ?

उत्तर–सः सायम् पंचवादने खेलति ।

इसी क्रम में प्रशिक्षु बच्चों को समय–चक्रम के बारे में भी बता सकते है। जैसे–

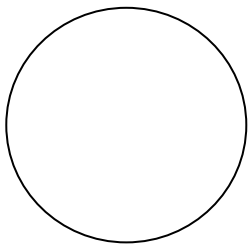

षष्ठ वादनम्

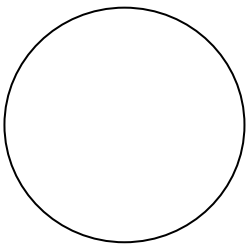

सपाद् पंचवादनम्

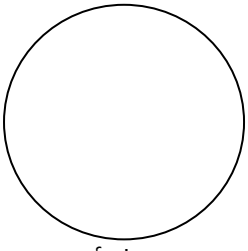

सार्ध पंचवादनम्

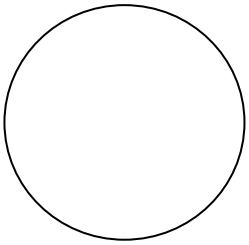

पादोन सप्तवादनम्

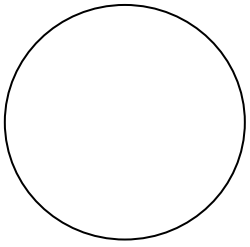

पंच क्षणाधिकम् षड् वादनम्

कहानी विधिः–

विद्यालय में आने के बाद बच्चा अपनी कक्षा में आता है। कक्षा कक्ष का वातावरण भी ऐसा सृजित किया जाना चाहिए कि बच्चा संस्कृत भाषा को कठिन न समझे बल्कि वह यह समझने कि

यह एक सरल और सहज भाषा है। अतः प्रशिक्षु को चाहिए कि कक्षा में कुछ सरल और सरस कविताओं, कहानियों के चार्ट चित्र सहित टांगें अतः प्रशिक्षु को चाहिए कि संख्या–बोध कराने के लिए कहानी विधि द्वारा बच्चों को अत्यन्त सहज तरीके से बोधगम्य कराएं। क्योंकि कहानी बच्चों को सोचने–समझने, जानने, कल्पना करने अथवा जोड़ने घटाने का पूरा अवसर देती है। इस परिप्रेक्ष्य में बच्चों को एक कहानी जिसका शीर्षक है–

''एकः कुत्र गतः ? के माध्यम से 1 से 10 तक की संख्या को बहुत सरल तरीके से सिखाया जा सकता है। इस कहानी का रूचिकर बनाने के लिए बच्चों द्वारा संवाद हाव–भाव के साथ कराया जा सकता है।

जैसे– नायकः ––वयं सर्वे स्म न वा ? –––एकः दौ, त्रयः चत्वारः पंच, षद, सप्त, अष्ट नव (नौ बच्चों को खड़ा करके गिनवायें)

विशेष– कक्षा 5 के बच्चों के लिए इसका नाटकीय प्रस्तुतीकरण भी बहुत प्रभावी होगा।

पूरी कक्षा को दस–दस कीपंक्ति में खड़ा करके कई बच्चों से गिनती का अभ्यास–एकः द्वौ, त्रयः चत्वारः पंच, षड, सप्त, अष्ट, नव दश, एकादश, त्रयोदश, चर्तुदशः पंचदश, षोड्स, सप्तदश, अष्टदश, एकोन विंशति, विंशति।

मूल्यांकन–

संस्कृत मूल्यांकन हेतु हमे नये दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यमता है। लिखित अभिव्यक्ति कहानी, घटना, वर्णन आदि हेतु प्रबन्धाात्मक प्रश्न आवश्यक हैं, किन्तु साथ ही वस्तुगत परीक्षा के लिए बहु विकल्पीय, तुलना, रिक्त स्थान की पूर्ति आदि प्रश्नों को भी समाहित करना चाहिए। संस्कृत में मौखिक परीक्षा का भी आयोजन कराना आवश्यक है। जिससे उनकी ध्वनियों एवं शब्दों के उच्चारण, वाचन तथा मौखिक अभिव्यक्ति का आकलन किया जा सके।

1. गतिवधि आधारित मूल्यांकन पर बल दें।
2. संस्कृत में संख्याओं को पूछना, संख्याओं को लिखने को कहना।
3. पाठों में प्रयुक्त संख्यावाची विशेषणों की सूची बनवाना।

–0–